ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक,
साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

वर्षः 69 अंकः 05 मई, 2018

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

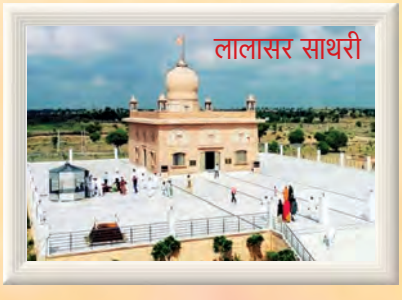

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2075 प्रथम ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी–14.05.2018, सोमवार सायं 7.46 बजे

उतरेगी–15.05.2018, मंगलवार सायं 5.17 बजे

सम्वत् 2075 द्वितीय ज्येष्ठ की अमावस्या

लगेगी–12.06.2018, मंगलवार प्रातः 4.33 बजे

उतरेगी–13.06.2018, बुधवार मध्यरात्रि 1.12 बजे

सम्वत् 2075 आषाढ़ की अमावस्या

लगेगी–12.07.2018, गुरुवार दोपहर 12.01 बजे

उतरेगी–13.07.2018, शुक्रवार, प्रातः 8.17 बजे

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या–उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा–दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद–विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

सह संपादिका
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 100
25 वर्ष : ₹ 1000

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-73	4
सम्पादकीय	6
साखी	7
जाम्भाणी साहित्य का दिग्दर्शन	9
गूरु जाम्भोजी की साधना पद्धति	13
किरण बिश्नोई ने कॉमनवैल्थ खेलों में लहराया परचम	17
1857 की क्रांति और बिश्नोई समाज	18
बधाई सन्देश	21
जल विन ज्यांन पलक में जावै	22
जाम्भाणी संस्कार शिविर सूचना	26
रिश्ते संवेदना के	27
काला हिरण मामले में सलमान को 5 साल की सजा	28
अमल, तम्बाकू, भांग, मद्य, माँस से दूर ही भागे	29
अनमोल प्राणी	30
श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल महिमा शतक	31
जांभाणी हरजस: दुर्गादासजी कृत हरजस	34
लोक साहित्य: बिश्नोई लोकगीत	35
सह-अस्तित्व की मधुरता	36
जैसी नगरी - वैसे लोग	37
पर्यावरण रक्षन्तु: वनों की कटाई के परिणाम और दुष्प्रभाव	38
बाल कविताएँ: कर्मा गोरा, सेल्फी, बुआ, छोना, प्रसाद, हाऊ	40
कैरियर: पैकेजिंग इंडस्ट्री में बेशुमार अवसर	41

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद-73

दोहा

विश्नोई एक आय कै, कहि सतगुरु से बात।
जोगी सिला हिलावही, कहो कहा करामात।

गुरु जम्भेश्वर जी शिष्य मण्डली सहित विराजमान थे। उसी समय एक बिश्नोई ने आकर गुरु से बात पूछते हुए कहा हे देव! मैंने एक योगी देखा है, वह कभी-कभी बड़ी भारी शिला पत्थर को हिला देता है, उसमें क्या करामात है, वह कोई योगी है या पाखण्डी? तब गुरु देव ने यह सबद उच्चारण किया।

सबद-73

हरी कंकेहड़ी मंडप मैड़ी, जहां हमारा वासा।
चार चक नव दीप थर हरे, जो आपो परकासूं।

भावार्थ- योगी शिला हिलाता है या शिला योगी को हिलाती है या तुझे केवल हिलती हुई दिखती है या योगी ही शिला उपर बैठा हुआ हिल रहा है। इन बातों को आप छोड़िये, यह तो व्यर्थ का वाद विवाद ही है। मुख्य बात तो यह है कि योगी जब आसन लगाकर बैठे तो उसका आसन जरा भी हिलना-डुलना नहीं चाहिये। '**स्थिर सुखं आसनम्**' स्थिर तथा सुखपूर्वक बैठना ही आसन है इसी आसन से योग सिद्धि होती है। गुरु श्री देवजी कहते हैं कि मेरा भी तो आसन यहाँ पर हरी-भरी कंकेहड़ी के वृक्षों के नीचे स्थिर है। इन्हीं सम्भराथल के आस पास, उपर नीचे कंकेहड़ी वृक्षों का बहुतायत है ये ही हमारे लिये मंडप है तथा महल मन्दिर भी है। मैं इसके नीचे सुखपूर्वक बहुत समय से निवास करता आया हूँ। आगे भी करता रहूँगा तथा इस कंकेहड़ी वृक्ष के नीचे बैठा हुआ मैं यदि अपने ज्योतिर्मय प्रकाश का पूर्णतया विस्तार कर दूँ अर्थात् सूर्य रूप अपनी ज्योति का तेज पूर्णतया विकसित कर दूँ तो यह सम्पूर्ण सृष्टि अर्थात् चार चक नव द्वीप ये सभी थर-थर कांपने लग सकते है। इसमें भूचाल आ जाये। यह धरती प्रकम्पित हो जाये तो इसके उपर रहने वाले जीव जन्तु भी व्याकुल हो जायेंगे।

गुणियां म्हारा सुगणां चेला, म्हे सुगणां का दासूं।
सुगणां होयसी सुरगे जास्ये, नुगरा रह्या निरासूं।

जो सद्गुणों से विभूषित सज्जन पुरुष है वो तो हमारे अच्छे शिष्यों में गिने जाते है। ऐसे शिष्यों के तो हम अधीन रहते हैं। जैसा वो चाहे वैसा हमें करना पड़ता है। सच्चा भक्त सदा ही भगवान को वश में करता आया है। जो सुगरा शिष्य हो गया है वह तो निश्चित ही स्वर्ग में जायेगा तथा नुगरा-गुरु रहित मनमुखी व्यक्ति इस जीवन को पाकर भी निराश हो जायेंगे, अन्त में निराशा ही हाथ लगेगी। जीवन के दाव को खो बैठेगा। इसलिये गुरु धारण करना चाहिये।

जाका थान सुहाया घर बैकुण्ठे, जाय संदेशो लायौं।
अमियां ठमियां अमृत भोजन, मनसा पालंग सेज निहाल बिछायो।

जिन लोगों ने आज से पूर्व सुकृत करके वैकुण्ठ को प्राप्त कर लिया है वे वहाँ पर सुहाने दिव्य नित्य स्थायी घर में निवास कर रहे हैं। वहाँ पर अमृतमय मीठा स्वादिष्ट सुरूचिकर पदार्थ स्वतः ही सुलभ है तथा इच्छानुसार पलंग सुकोमल शैया सोने के लिये

बिछाई हुई सुलभ है तथा मनसा भोग प्राप्त होने से सभी तृप्त तथा शांत भाव से विराजमान है।

श्री देवजी कहते हैं कि मैंने यह सभी कुछ अपनी आँखों से देखा है तथा उनका संदेशा लेकर आया हूँ। वहाँ का संदेशा देकर आपको भी वहाँ पर पहुँचाना है। वे जो लोग ध्रुव, प्रह्लाद आदि पहुँच चुके हैं वे आपके ही सम्बन्धी थे। इसलिये आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यही उनका संदेशा मैंने आप तक पहुँचा दिया है इसलिये आप लोगों को परम लक्ष्य वहीं तक पहुँचने का होना चाहिये। इन छोटी मोटी सिद्धियों या सिद्धों के चक्कर में अपने गन्तव्य स्थान को भूल मत जाना।

जागो जोवो जोत न खोवो, छल जासी संसारूं।
भणी न भणबा, सुणी न सुणबा, कही न कहबा, खड़ी न खड़बा।

इसलिये संसार के लोगो! जागृत रहो। निद्रा में सोना नहीं। जागृत अवस्था में सदा ही सचेत रहो। व्यर्थ में ही आलस के वशीभूत होकर समय को सांसारिक विषयों में ही समाप्त नहीं कर देना। इस जीवन के पीछे भी कोई और जीवन है उसका भी ख्याल रखना। कहीं यह लोक और परलोक दोनों ही बिगाड़ नहीं बैठना। सावधान! परमात्मा की दिव्य ज्योति कण-कण में बिखरी हुई है। उसका दर्शन अवश्य ही करो। यदि आप लोग भगवान का दर्शन चाहते हैं तो वह सच्चा दर्शन इसी संसार की चित्र विचित्र वस्तुओं में चेतन रूप से विद्यमान सता के रूप में संभव है। केवल इस संसार का ही चिंतन मनन दर्शन करते रहोगे तो तुम्हारे साथ बहुत बड़ा धोखा हो जायेगा, तुम छल लिये जाओगे।

हे प्राणी! तुमने जप करने योग्य विष्णु परमात्मा का जप स्मरण नहीं किया, किन्तु भूत-प्रेत आदि का जप करता रहा तथा सुनने योग्य सत्संग, भजन, कीर्तन, नीति विषय वार्ता नहीं सुनी वैसे ही जंगली गीत, गाली, कटु वचन सुनता रहा। कथन करने योग्य भगवद् चर्चा कथा महापुरुषों के दिव्य आख्यान सत्यवाणी आदि तो कहीं नहीं किन्तु व्यर्थ की आल-बाल, झूठ, कपट, निंदा भरे वचन ही बोलता रहा। तुझे करणीय योग्य कर्त्तव्य कर्म तो मानव धर्म अनुकूल हो, वह तो किया नहीं परन्तु सदा पाप कर्म चोरी-जारी आदि दुर्व्यसनों में पड़कर समय को व्यर्थ में ही नष्ट कर दिया।

रे! भल कृषाणी, ताकै करण न घातो हेलो।
कलीकाल जुग बरते जैलो, तातै नहीं सुरां सो मेलो।

हे अच्छे किसान! तू खेती तो बड़ी ही मेहनत से करता है। किन्तु अध्यात्म साधना रूपी खेती में ढ़ील दे रखी है। इसलिये जो व्यक्ति सुनने योग्य वार्ता सुन नहीं सकता, कहने योग्य वार्ता कह नहीं सकता, जपने योग्य देव को जप नहीं सकता तथा करने योग्य कर्म को कर नहीं सकता, उसके कानों में यह ज्ञान की ध्वनि- आवाज कैसे डाली जा सकती है। ऐसे लोगों के सामने चाहे जोर से चिल्लाकर कहो चाहे प्रेमपूर्वक धीरे से कहो, कोई भी फर्क पड़ने वाला नहीं है।

हे प्राणी! यह कलयुग का समय अति शीघ्र ही व्यतीत हो रहा है। वैसे भी बहुत कम प्राप्त था उसमें भी बीतता जा रहा है। यदि यह अवसर बीत गया तो फिर तेतीस करोड़ देवताओं से मिलन कैसे होगा? क्योंकि इस जीवन के पश्चात् पुनः मानव शरीर मिलना दुर्लभ है और यदि मिल भी गया तो यह दिव्य अवसर मिलना कठिन है। सतगुरु, उत्तम कुल में जन्म, धन बल, शरीर से स्वस्थ होना अति कठिन है ये सभी संयोग हुए बिना केवल मानव जीवन से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

- साभार 'जंभसागर'

सम्पादकीय

विष्णु-विष्णु भण अजर जरीजै

मनुष्य का मन अति चंचल है। यह बाह्री विषयों में बहुत रमता है। जिस प्रकार पानी का स्वभाव नीचे की ओर बहने का होता है, ऐसे ही मन का स्वभाव भी सांसारिक विषयों की ओर जाने का होता है। इसको वश में करना एक साधना साध्य कार्य है। मन को इसी स्वभाव के चलते ही काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ आदि पंच विकार, जिनको 'अजर' कहा गया है, ये मनुष्य पर प्रभावी हो जाते हैं और उसकी आध्यात्मिक उन्नति के सारे पथ अवरुद्ध कर देते हैं। इन विकारों पर नियन्त्रण करने को लेकर मनुष्य क्या करे, इसको लेकर हमारे धर्म ग्रन्थ भरे पड़े हैं। इस कठिन कार्य को करने का सबसे सरल सूत्र गुरु जम्भेश्वर जी ने दिया है कि विष्णु के जप से इन पर नियन्त्रण प्राप्त करें।

विष्णु के जप से अवांछित चिन्ताओं और विचलित विचारों से मुक्ति मिलती है, मन को स्थिरता मिलती है। गुरु जाम्भोजी ने विष्णु जप को सांसारिक ज्वाला को शांत करने वाली जड़ी-बूटी के समान माना है। यदि मनुष्य को अपना कल्याण करना है तो उसे इन 'अजरों' से मुक्ति प्राप्त करनी ही होगी। इन पंच विकारों के रहते न तो मनुष्य स्वयं शान्ति से बैठ सकता है और न ही दूसरों का भला कर सकता है। इन पंच विकारों की गिरफ्त में आते ही मनुष्य के विवेक पर पर्दा गिर जाता है और वह करणीय-अकरणीय का विचार खो देता है। इन विकारों से मुक्ति के बिना मनुष्य पशु धरातल से ऊपर नहीं उठ सकता और वह सच्चे अर्थों में मानव नहीं बन सकता है। जब तक मनुष्य अपने गुण एवं कर्मों से सच्चा मानव नहीं है तब तक वह इस सृष्टि के लिए किसी भी प्रकार से उपयोगी नहीं है।

गुरु जम्भेश्वर जी मनुष्य की इस दुर्बलता को जानते थे इसलिए उन्होंने अपने धर्म नियमों और वाणी में भी 'अजर' को 'जरने' यानी वश में करने का उपदेश दिया है। साथ ही गुरु महाराज यह भी जानते थे कि इन 'अजरों' को 'जरना' कितना मुश्किल है इसलिए सूत्र भी दिया 'विष्णु जप'। यदि हम एकाग्रचित होकर 'विष्णु जप' करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी और जीवन सफल हो जाएगा, अन्यथा तो सांसारिक ज्वाला में जलते रहेंगे। ध्यान रहे गुरु जम्भेश्वर जी द्वारा बताये गये 'विष्णु जप' का बाह्री कर्म काण्डों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

दामोजी कृत साखी

विसनो विसन भंणति, जग तारण जीवां धणी।
किसन कायम करतार, हरि हरि जपियो दुनि।
हरि साचौ जपौ दुनिया, संगठ मांहि उबारयसी।
संगठ मांहि उबारसी नै, पहलाद वीरिया तुरत्य आयो।
मील्यो मया करि मीत, परमेसर पुरो धणी।
देव को दीदार दीस, विसन-विसन भणंत।1।

झंभ गुरु जगनाथ, मधु सुदन मन्य भांवणौ।
खाल्यक दैत दीवाण्य, सांई को सबद सुहावणौ।
सांई को सबद सुहावणौ, सकल को आधार।
मोहनी मुरती सकल शोभा, साम्य सिरजैण हार।
गोम्यद गीरधर नांव नरहरी, अंतर जामी ईस।
रीणछोड़ राघौ क्रीम कैसो, झंभ गुरु जगदीश।2।

लिछमण राजा राम, परस परम गुर पेखीया।
कान्ह कुंवर नंदलाल, सिरजण हारा देखीया।
सिरजण हारा देखिया नै, पत्यसाह पुरो कछ कोरंभ तूं धणी।
मछ महपत्य मेल्य मेख, बावन बुध रामै धणी।
निरंकार निरंजण अलख संभु, चत्रभुज तंमै थया।
लछण राजा राम, परस परमेसर गुरु पेखिया।3।

नारायण नीज नाम, जपीय तो सुख पाइया।
त्रिकमे तिलक तीयार, गोम्यद का गुण गाइये।
गोम्यद का गुण गाइय जी, जो श्री लाल गोपाल।
चवदै भुवण रो राजियो, निकलंक दीन दयाल।
जगनाथ जी का कोड कीजै, दवारि का सुदामा।
मढ़ी पलटी हरि महल कीया, नारायैण नीज नाम।
जपीय तो सुख पाइये।4।

नारसिंघ नर मुलताण्य, मेछ मलण नै आवियो।
साधा करण संभाल, रीण मां साध उबारियो।
रीण मां साध उबारियो नै, सारीया सह काज।
देव दया करि मुकति दीजै, जांह नै तुठो राज।
वीसन दांम मुकति दीजै, रथि आयो रहमांण।
पोहप मा परगास कीयो, नारयसिंघ नर मुलताण।
भगता संग्य बुधर रंम्यौ।5।

भावार्थ- जगत को तारने वाले मालिक विष्णु का स्मरण भजन करें। वही विष्णु ही कृष्ण के रूप में कर्ता धर्ता बनकर आये थे उसी हरि का स्मरण बारंबार करे। सच्चे मन से हरि का स्मरण करे वही अनेकों प्रकार के कष्टों से रक्षा करेंगे। निश्चित ही संकटों से रक्षा करेंगे क्योंकि वही एक ही परमेश्वर सभी का मालिक है। प्रह्लाद पर जब संकट आया था तब वे विष्णु ही नृसिंह का रूप धारण करके तुरन्त आये थे। वही विष्णु ही इस समय जम्भेश्वर जी के रूप में अपनी माया द्वारा 'अनेक रूप रूपाय' धारण करके आये हैं। देवजी की कृपा बरस रही है अपने घड़े को सीधा करें। अवश्य ही अमृत वर्षा से आपका घड़ा भर जायेगा।1।

जम्भगुरु जी जगन्नाथ स्वामी है। मधुसूदन भगवान विष्णु सभी के मन को आकर्षित करते है। संसार के स्वामी सभी के सहारा रूप श्री देवजी की वाणी सुहावणी शोभायमान है। श्रवण कीर्तन करने से सभी के मन को हरण करने वाली है। सभी शास्त्रों की आधार वाणी श्रवण करें। सिरजन हार स्वामी की दिव्य मोहिनी मूरत शोभायमान हो रही है। परमात्मा को अनेकों नामों से पुकारा जाता है। जैसे गिरधर, गोविन्द, नरहरि, विष्णु, अन्तर्यामी, ईश्वर, रणछोड़, राघव, करीम, केसव, झंभगुरु, जगदीश, लक्ष्मण, राजाराम, परसराम, गुरु आदि कान्हा, कृष्ण, कंवर, नन्दलाल, परमेसर, सतगुरु, सृजनहार, पातशाह, पूर्णरूप, कच्छ, कौरंभ, मच्छ, महीपति, बावन, बुध, निरंकार, निरंजन, अलख, शंभु, चतुर्भुज, नारायण, त्रिकम, तिलक, श्रीलाल गोपाल, चवदै भवन का राजा, श्री भगवान इत्यादि नामों से उस गोविन्द का गुणगान करें। जप-तप करें। वे निष्कलंक दीन दयाल जगन्नाथ से प्रेम करें जिन द्वारिकानाथ ने सुदामा की झोंपड़ी पलटकर महल बना दिया था। उसी का जप करें तो सुख मिलेगा।4।

भगवान नृसिंह का रूप धारण करके राक्षस हिरण्यकश्यपु को मारने के लिये आये थे। संत प्रह्लाद की रक्षा की थी और युद्ध भूमि में जो सेवकों की रक्षा करता है पाण्डवों को बचाता है वही देव हमारी रक्षा करे। हे देव! दया करे! दामोजी कहते है कि हमें जीवन युक्ति और मुक्ति प्रदान करें। जिन्होंने फूल में सुगन्धी और सूर्य रूप होकर सभी को प्रकाशित एवं विकसित किया है। उसी देव को मेरा बारंबार नमन है। स्वीकार करें एवं आनन्दित करें। भक्तों के साथ भूधर स्वामी परमात्मा ने खेल किया है। वह हमें भी सफल जीवन जीने की कला प्रदान करें।

साभार-
साखी भावार्थ प्रकाश

जाम्भाणी साहित्य का दिग्दर्शन

जाम्भाणी साहित्य को हम मोटे तौर पर तीन विभागों में विभाजित करते हैं। प्रथम गुरु जाम्भोजी के समकालीन कवियों का जाम्भाणी साहित्य में योगदान। जिनमें सर्वप्रथम तेजोजी चारण (विक्रम संवत 1440-1575 के बीच का समय अनुमानित है) का नाम आता है। तेजोजी का ग्रन्थ 'विसन विलास' तथा फुटकर छन्द प्राप्त हुए हैं। तेजोजी चारण के सम्पूर्ण साहित्य पर सर्वप्रथम कार्य डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने किया है। जो केन्द्रिय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से प्रकाशित है।

2- समसदीन-इनके द्वारा रचित दो साखियाँ प्राप्त हुई हैं। 3-डेल्हजी-जन्म विक्रम संवत् 1490-1550 अनुमानित है। इनके द्वारा रचित कथा अहंमनी-अभिमन्यु 717 दोहे चौपाइयों में प्राप्त हुई है। तथा साखी 'बुध परगास 27 चौपाइयों की रचना प्राप्त है। इनके द्वारा रचित इन दो ही रचनाओं का पता चलता है। ये दोनों ही पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रह की गयी हैं।

4-पदम भक्त-अनुमानित विक्रम संवत् 1500-1555 का जीवनकाल है। इनके द्वारा रचित 'किसनजी रो ब्याहलो-रुक्मिणी मंगल बहुत ही प्रसिद्ध जागरणों में गायी जाने वाली सरस रचना है। इसका तथा अन्य आरती फुटकर छन्द आदि का भी इस पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रह किया गया है।

5- कील्हजी, अल्लूजी, कान्होजी इन चारण कवियों द्वारा रचित फुटकर छन्द कवित्त आदि संग्रह किया गया है। इनकी पूरी रचना प्राप्त नहीं हुई है। किन्तु गुरु जाम्भोजी के बारे में महत्वपूर्ण छन्द प्राप्त हैं। जिनका पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रह किया गया है।

6-उदोजी नैण-विक्रम संवत् 1505-1593 में अनुमानित है। ये जाम्भोजी के अत्यन्त निकटम विश्वनीय कवि थे। इनकी कथा जम्भसार में साहबराम जी ने विस्तार से लिखी है। इन्होंने जाम्भोजी की महिमा का गुणगान, चार आरती, 15 साखियों की तथा 95 फुटकर छन्द कवितों की रचना की है। इस समय हमारे पास छन्द 73 ही प्राप्त हैं तथा उदोजी ने 8 हरजस एवं 'ग्रभ चेतावणी' नाम से एक रचना 145 दूहा चौपाई आदि छन्दों में की है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने बताया कि यह ग्रंथ उदोजी अड़िग का है। ये सभी पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रहीत है। सम्पूर्ण जाम्भाणी साहित्य की ये चार आरतियाँ मूल कही जा सकती हैं।

7- मेहोजी गोदारा- विक्रम संवत् 1540-1601 में होते हैं। इनकी एक मात्र रचना रामायण है। अनेक रामायणों के मध्य यह भी अपना विशिष्ट महत्व रखती है। ये पूर्ण रूपेण पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रहीत हैं।

8- आलमजी - संवत् 1540-1601 में हुए हैं। इनके द्वारा 8 साखियां और 12 हरजस प्राप्त हैं। यहां पोथो ग्रंथ ज्ञान में केवल 12 हरजस की संग्रह किये हैं। उनके द्वारा रचित साखियाँ, 'साखी भावार्थ प्रकाश' में हिन्दी भावार्थ सहित संग्रहीत है। अन्य भी हुजूरी कवियों की लंबी सूची है, किन्तु एक दो साखियों तक ही सीमित है। इसलिये महत्वपूर्ण कवियों का सामान्य परिचय यहाँ पर दिया जा रहा है। यदि इन कवियों की तुलना की जावे तो उदोजी नैण जाम्भाणी साहित्य में अग्रगण्य कवि हैं। जाम्भोजी का प्रत्यक्ष दर्शन, शब्द श्रवण और उनकी सिद्धि का परिचय प्राप्त किया था तथा उनका शुभ आशीष प्राप्त हुआ था। वैसे तो किसी कवि को बन्धन में नहीं डाला जा सकता, किन्तु अधिकतर रचना जाम्भोजी के बारे में ही की है।

9-वील्होजी-विक्रम संवत् 1589-1673 तक इनका जीवनकाल प्रमाणित है। जाम्भोजी के अन्तर्ध्यान होने के आठ वर्ष बाद यानि 1601 में वील्होजी का आगमन हुआ था तथा संवत् 1611 में नाथोजी से भगवाँ वेश धारण किया था। दस वर्षों तक अपने गुरु नाथोजी से ज्ञान श्रवण करके प्रचार-प्रसार के लिए तैयार करते रहे। वील्होजी ने अपनी साधना से सिद्धि प्राप्त करके अपने कार्य सिद्धि हेतु भ्रमणार्थ

प्रस्थान किया।

समाज की स्थिति देखी और उनकी समस्या का निवारण करने हेतु जोधपुर नरेश शूरसिंह के पास पहुँचे। गुरुजन राजा को सदा ही सचेत करते आये हैं। वहाँ राजा को अपनी सिद्धि का परिचय देते हुए उनके राज्य में होने वाले अन्याय से अवगत करवाया। वील्होजी ने राजा को तीन परचे दिये। वैशाख के महीने में बाजरी के सिट्टे, काकड़िया और मीठे मतीरे जिमाये। राजा को समझाकर, उनसे दण्ड देने का अधिकार प्राप्त किया। अधिकार में खूंटा और कोरड़ा, जो कपड़े का बनाया जाता है तथा साथ में सिपाही भी दिये थे। खूंटे से बाँधकर कोरड़े से पीटा जावे, ताकि कोई मर न जावे।

उस समय दो तरह की समस्या थी। प्रथम तो लोग धर्म छोड़ने लगे थे। दूसरी समस्या यह भी थी कि अभी नये नये बिश्नोई बने ही थे। उन्हें जबरदस्ती, उनके ही पीछे रह गये, उनके भाई बन्धु ही तंग करने लग गये थे। जिन लोगों ने धर्म छोड़ने के लिए किसी के साथ जबरदस्ती की थी, उन्हें वील्होजी ने दण्डित किया था।

वील्होजी ने दूसरा कार्य भी यह किया कि सभी बिश्नोइयों को एकत्रित होकर अलग गाँव बसाने की सलाह दी। जिससे कि धर्म पालन सही ढंग से हो सके। इसलिए अभी भी बिश्नोई के निखालस गांव जोधपुर, बीकानेर, फलोदी आदि इलाकों में बसे हुए हैं। उन्होंने साथरियों की स्थापना की थी।

वील्होजी ने इन साथरियों में पंचायतें कायम की थी। आपसी छोटे-मोटे झगड़े, इन साथरियों में बैठकर सुलझा लिये जावें। वील्होजी ने ही मुकाम का आसोजी मेला तथा जाम्भोलाव का चैती मैला प्रारम्भ करवाये। वील्होजी द्वारा यह तो उनका समाज सुधार का कार्य था।

दूसरा कार्य उन्होंने साहित्य सृजन का किया। आख्यान काव्य गुरु जम्भेश्वरजी से सम्बन्धित वील्होजी ने ही प्रारम्भ किया। इन गुरु चेलों तीनों की त्रिवेणी ने जाम्भाणी साहित्य संरचना को प्रयाग बना दिया। वील्होजी ने सम्पूर्ण साहित्यिक विधाओं में अपने भाव प्रकट किये हैं। उनके द्वारा रचित दूहा, साखी, कवित्त, छन्द, चौपाई, सोरठा आदि मूल जाम्भाणी साहित्य का आधार कहा जा सकता है। उनसे उत्तर में आने वाले कवियों के लिये प्रेरणा के स्रोत कहे जा सकते हैं। आज हमारे पास उपलब्ध साहित्य वील्होजी की ही देन है। इनके साहित्य के ऊपर अनेक शोध कार्य हो चुके हैं। इनके समग्र साहित्य के संकलन, सम्पादन एवं भावार्थ पर सर्वप्रथम कार्य डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने किया है। यह उन्होंने सर्वप्रथम सन् 1993 में स्वयं प्रकाशित करवाया। इस समय वील्होजी द्वारा रचित मूल साहित्य पोथो ग्रंथ ज्ञान में सम्पूर्णता से संग्रहीत हो चुका है। वील्होजी के आगमन से पूर्व जाम्भाणी साहित्य केवल कण्ठस्थ ही था। उन्होंने ही सर्वप्रथम लेखन का कार्य प्रारम्भ करवाया था।

10-केशोजी गोदारा-विक्रम संवत्-1630-1736 जीवनकाल प्रमाणित है। हीरानन्दजी ने कहा है - 'कैसो कथा अरथ नै करमू' केशोजी आख्यान काव्य के बहुत बड़े शिल्पी थे। उनके काव्य का सौन्दर्य प्रह्लाद चरित्र में पूर्णतया परिलक्षित हुआ है। अन्य भी काव्य की अनेक विधाओं में केशोजी पारंगत थे। उन्होंने कथा, साखी, छन्द, हरजस, कवित्त, सवैया, चन्द्रायणा, दूहा इत्यादि सभी प्रकार के छन्द साहित्य में प्रयोग किये हैं। कहा जाता है कि 'उपमा कालिदासस्य, भारवैरर्थ गौरवं' उसी प्रकार से उपमा अलंकार केशोजी ने प्रह्लाद चरित्र में विशेषत: प्रयोग किया है। जो एक कवि में स्वाभाविक गुण हो सकते हैं। उनसे कहीं अधिक गुण केशोजी की काव्य कला में निहित हैं। कुछ फुटकर रचनाएँ छोड़कर केशोजी की सम्पूर्ण रचनाएँ इस समय पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रहीत है।

11-सुरजनजी पूनियां-संवत् 1640-1748 जीवनकाल कहा जा सकता है। सिद्ध कवि सुरजनजी वील्होजी के उतराधिकारी शिष्य थे। सुरजनजी की कविता सरल काव्यत्व के गुणों से भरपूर होते हुए भी अर्थ करने में जटिलता को प्रकट करती है। उन्होंने

तत्कालीन कर्णश्रुति कैसे प्राप्त छोटी-छोटी लोक कथाओं को एक-एक छन्द में पिरोने की कोशिश की है। उनका काव्य गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ करता हैं। उन कथाओं -घटनाओं को इस समय बताने वाला कोई नहीं होने से कड़ी टूट गयी हैं। उसे जोड़ने वाला कोई विरला ही होगा। इसलिये कहा गया है कि 'भारवैरर्थ गौरवम्' यह उक्ति सुरजनजी में चरितार्थ होती है। सुरजनजी के पद पहेली जैसे मालूम पड़ते हैं। उन पहेलियों को सुलझाने वाला होता तो अर्थ अत्यन्त सरल भी हो जाता। प्राचीन ऋषियों द्वारा सूत्रात्मक भाषा का प्रयोग होता रहा है। सुरजनजी उन्हीं ऋषि परंपरा के सिद्ध कवि हैं।

सुरजनजी ने साखी, कवित्त, छन्द आदि में अपने गुरु वील्होजी की भांति ही साहित्यिक उच्च कोटि की रचना की थी। उन्होंने जाम्भोजी के जीवन से सम्बन्धित कथाओं के अतिरिक्त भी पौराणिक पात्रों को भी अपने साहित्य में बड़े ही आदर से जगह दी है। उनके द्वारा मरुभाषा में रचित 'राम रासो' तो बहुत ही प्रसिद्ध तथा मौलिक रचना है तथा 'भोगलपुराण, उषापुराण' आदि रचना भी। इन्होंने पौराणिक आधार पर लिखी है। इस समय कथा परिसिध और भोगलपुराण अप्राप्त हैं। अन्य सभी रचनाएँ पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रहीत हैं।

12-गोकुलजी-संवत् 1700-1790-जीवनकाल प्रमाणित है। खेजड़ली बलिदान के प्रत्यक्ष दृष्टा कवि गोकुलजी ही थे। उन्होंने साखी 'पण पालण पीसण गंजण, रूंखा राखण हार' की रचना आँखों देखी घटना का सजीव विवेचन किया है। उस घटना में तीन सौ तिरेसठ स्त्री पुरुषों ने बलिदान दिया था। उसी को ही आधार मानकर कवि साहबरामजी ने जम्भसार में कथा विस्तार से लिखी थी। इनकी दूसरी साखी तेतीसां प्रतिपाल भी बहुत ही प्रसिद्ध रही है। इन्होंने जाम्भोजी के अवतार सम्बन्धी इन्दव छन्द, अवतार विगति, परची आदि की रचना भी की है, जो पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रहीत हैं। इन्हीं परंपरा में रासानन्द जी, मुकनजी, सेवादासजी, चतरदासजी, सुदामाजी, हीरानन्दजी, हरजी वणियाल आदि के फुटकर छन्द दोहे आदि प्राप्त होते हैं। ये सभी पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रहीत हैं।

13-परमानन्दजी-संवत् 1750-1845 जीवनकाल प्रमाणित है। आज तक जाम्भाणी साहित्य को सुरक्षित करने का श्रेय परमानन्दजी को ही जाता है। उन्होंने अपने जीवन काल में पाँच पोथे लिखे थे। ये उनके एक ही पोथे की पाँच प्रतियाँ बनायी थी। उस समय आज की तरह प्रेस की सुविधा नहीं होने से हाथ से ही लिखा जाता था। उनका पाँच कापियों में संग्रह करके इस समय हमारे पास पहुँचाने का यह महत्वपूर्ण कार्य करके मरुभाषा को जीवित रखा। इस प्रकार से मानव मात्र को ज्ञान का संदेश देने वाले महायशस्वी परमानन्दजी ही थे। उन पाँचों में से इस समय दो पोथे हमारे पास हैं। तीन पोथे इस समय हमारे समाज के पास नहीं हैं। पता नहीं कि कहाँ लुप्त हो गये हैं। खोज जारी है। जो भी परमानन्दजी द्वारा संग्रहीत रचना प्राप्त हुई है वही मुख्यतया इस प्रकाशित पोथो ग्रंथ ज्ञान का आधार है। परमानन्दजी ने स्वयं कहा है कि -

बड़ पोथी गिण वील्ह की, दूजी सुरजन दास।
तीजै मुझ मुकनु गुरु, सुरताण पिता मुझ आख।1।
दसंधी दासों खीराजजी, रासोजी सुरताण।
ए पांचूं परत्या बांच के, पौथो लिख्यो प्रवांण।2।
कै बात सुणी साधा कनां, कै पोथियों मां परवांणी।
परमाणंद सुरतांण रै, लिखियां सबद सुजाणी।3।
दीठा बाच्या मैं लिख्या, सासतर मां था सोय।
ग्याता कोई बांचि कै, दोस न देइयो मोय।4।
मै तो मांडया मोह कर, पुसतक देखि विचारी।
सबदां रा अरथ अनंत है, जांणै सिरजण हारि।5।
कचा सब संसार है, सचा सबद ततसार।
परमाणंद सु परम गुरु, राखे हेत पियार।6।
अनंत सबद सतगुरु कह्या, पच्यासी वरस परवाण्य।
नाथव कंठ रहिया अता, सीख्या वील्ह सुजाण।7।
पुसतक वील्ह मंडाविया, सेई बात तत सार।
सबदा रा अरथ अनंत है, जांणै सिरजण हार।8।
सबद सुणै बाचै सबद, खोजै अरथ विचार।
तीरथ बरत ओर जग्य पुन, पावै मोख दवार।9।

लिखतु परमाणंद संत जात्या वणहाल थापन सुरतांण जी रा सुत रासजी रा चेला दांमजी रा पोता सीख मारवाड़े नव कोटि रा थापना अतीत गंगापार रा जूना पुसतक देख्या महंतारी पोथी देखी ओ ग्रंथ ग्यान लिख्यों छ वार बुधवारी वचनारथी कान्हा गांव रासीसर सुभ सथाने दामैजी रा थापना।

परमानंदजी अपने समय में यदि पोथा संग्रह न करते तो आज हमारे पास जाम्भाणी साहित्य शून्य होता। वील्होजी आदि का लिखा हुआ साहित्य परमानंदजी के समय अति जीर्ण-शीर्ण हो चुका था। अब तक उसका बचना अति कठिन था। परमानंद जी का मानव जाति के लिये किया गया उपकार भुलाया नहीं जाना चाहिये।

परमानंदजी ने स्वयं साहित्य का सृजन करके बहुत बड़ा कार्य किया है। परमानंदजी ने 39 हरजस 4 साखियाँ स्तोत्र आदि फुटकर छन्दों की रचना की हैं। परमानंद जी ने गद्य शैली में, 'साका' लिखा है। जिसमें समाज की महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है। 'छमसरी' जिसमें ज्योतिष सम्बन्धी महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी हैं। परमानंदजी की रचनाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उनकी साखी-दूहे है। 945 दूहों में प्रत्येक विषय को प्रगट किया। बिहारी के दोहों के बारे में कहा जाता है -

सतसइया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करै गंभीर।

किन्तु हम यहाँ पर इसी बात को परमानन्दजी के बारे में भी कह सकते हैं-

परमानंद के दोहरे, खटरस नीति पियार।
पढ़ण में नैन्हे लगे, नैण खोलण भवार।

14-उदोजी अड़ीग-संवत् 1818-1933 जीवन काल प्रसिद्ध है। उदोजी ने विशेष रूप से कृष्ण लीला का गान किया है। उनकी रचना में प्रह्लाद चरित्र बहुत ही प्रसिद्ध रचना रही है। होली पर पाहल के समय में प्रह्लाद चरित्र पढ़ने की परम्परा रही है। उसमें उदोजी कृत प्रह्लाद चरित्र ही पढ़ा जाता है तथा अन्य रचनाएं जैसे-स्नेह लीला, विष्णु चरित्र, कक्का सैतीसी, लूर, तथा फुटकर छन्द प्राप्त हैं। ये सभी पोथो ग्रंथ ज्ञान में संग्रहीत हैं।

15 - साहबरामजी राहड़ - संवत् 1871-1948 साहबरामजी कवियों की परम्परा में अन्तिम कवि कहे जा सकते हैं। उनकी कीर्ति का मुख्य आधार उनके द्वारा रचित ग्रंथ जम्भसार है। उनसे पूर्व में जो कुछ लिखा हुआ उन्हें प्राप्त हुआ था, उसको अपनी भाषा में संग्रहीत किया ही था और जो लिखा हुआ नहीं था, केवल श्रुति परम्परा से सुनते आ रहे थे, उन्हें भी अपने ढंग से कवि होने के नाते लिखा गया था। परमानंदजी के प्रथम पोथे के बाद सबसे विशाल ग्रंथ जम्भसार ही है। महाभारत की तरह जो कहीं भी नहीं मिलता, वह महाभारत में अवश्य ही मिल जाता है। यही बात जम्भसार के बारे में कही जा सकती है। यदि महाभारत में नहीं है, तो वह कहीं भी नहीं है। इस प्रकार का जम्भसार ग्रंथ बिश्नोई समाज का महाभारत ही है। यह ग्रंथ अलग से प्रकाशित हो चुका है। इस समय प्राप्त है। दो साखियां, एक आरती तथा फुटकर छन्द प्राप्त है। साहबरामजी के समय में ही कांठ उत्तर प्रदेश में ब्रह्मानंदजी ने भी गद्य में अनेकों ग्रंथो की रचना की थी। वर्तमान में उन प्राचीन परम्परा का कोई विशेष कवि नहीं है। यह तो जाम्भाणी साहित्य का दिग्दर्शन मात्र था। कुल सवा सौ से अधिक जाम्भाणी साहित्यकार हुए हैं, जिनका साहित्य केवल बिश्नोई समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की धरोहर है।

जाम्भाणी साहित्य अकादमी ने प्राचीन और अर्वाचीन ग्रंथों के प्रकाशन का बीड़ा उठाया है। अब तक तीसों पुस्तकें प्रकाशित करवा चुके हैं, जो भी कार्य संस्था कर रही है, वह सभी के सामने है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह जाम्भाणी साहित्य दर्पण मानव मात्र को पथ दिखलायेगा, यह मेरी मान्यता है। मरुभाषा में पद्य में रचित यह जाम्भाणी साहित्य उन महान् ऋषियों की देन है जो मानव का पथ प्रदर्शित करेगा। यही शुभ भावना है।

-कृष्णानन्द आचार्य, अध्यक्ष
जाम्भाणी साहित्य अकादमी
बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश
मो.: 9897390866

गूरू जाम्भोजी की साधना पद्धति

श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना, नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां, महाजनो येन गतः स पन्था॥

(महाभारत, वनपर्व 3/12/315)

श्रुतियां और स्मृतियां अनेक हैं। इनमें व्यक्त विचार एक जैसे नहीं है। ऋषि-मुनि भी एक नहीं हुए हैं। उनके विचारों में भी पूर्ण एकता का अभाव है। अतः पूर्वकालिक सभी ऋषि-मुनियों के सभी विचारों को यथारूप प्रमाण स्वरूप नहीं माना जा सकता। वस्तुतः इसीलिये धर्म का तत्त्व अति गूढ़ है। जिज्ञासु को उपादेय है कि वह उस मार्ग का अनुसरण करे, जिस पर चलकर महाजनों ने धर्म रूप परम तत्त्व का अपरोक्षानुभव किया है।

यहां प्रश्न होता है कि महाजन अथवा महापुरुष कौन हैं, जिसके आचरणों और विचारों को आदर्श मानकर परमतत्त्व का साक्षात्कार किया जा सके। साथ ही ऐसे महापुरुष से उस परमतत्त्व को जानने की शास्त्रबद्ध रीति कौनसी है?

पहले प्रश्न का उत्तर श्रीमद्भागवद्पुराण इस प्रकार देता है-

तस्माद् गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमम्।
शब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपशमाश्रयम्॥

(श्रीमद्भागवद् 11/3/21)

संसार में दो मार्ग हैं। एक श्रेय व दूसरा प्रेय। श्रेय का तात्पर्य निःश्रेयस-जीवन मुक्ति से है। प्रेय का तात्पर्य रागात्मक जीवन जीते हुए सांसारिक भोगैश्वर्यों में आकण्ठ डूबे रहने से है। जिस आत्मजिज्ञासु को श्रेय की आकांक्षा हो, उसको गुरु की शरणावलम्बन करनी चाहिये। उत्तम श्रेयाकांक्षी आत्मजिज्ञासु चलते-फिरते कनफूंके गुरु का आश्रय न लेकर ऐसे गुरु का अवलम्बन ले, जो शाब्दे-वेदांतादि और परे-परब्रह्म परमात्मा के अपरोक्षबोध में परमनिष्णात् व सम्पन्न हो। ऐसा गुरु ही वेदांतज्ञान, जिसको परोक्षज्ञान भी कहा जाता है, के द्वारा जिज्ञासु के समस्त भ्रमों और संशयों का उच्छेद करने में समर्थ हो पाता है। परमात्मा परोक्षज्ञान द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। उसको प्राप्त करने के लिये साधना करनी जरूरी है। साधना में अनेक विघ्नों का आना स्वाभाविक होता है। जो गुरु साधना करके परब्रह्म परमात्मा का अपरोक्षानुभव कर चुका हो, वही जिज्ञासु को साधनाकाल में आने वाले विघ्नों से निजात दिला सकता है। अतः गुरु के पास अपरोक्षज्ञान का होना भी अत्यन्त आवश्यक है। उपर प्रेय एवं श्रेय की चर्चा आई है। प्रेय और श्रेय को कठोपनिषद् में इस प्रकार परिभाषित किया गया है-

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो
योगक्षेमाद् वृणीते॥

(कठोपनिषद्-1/2/2)

श्रेय और प्रेय दोनों ही मनुष्य के सामने आते हैं। बुद्धिमान मनुष्य तो उन दोनों के स्वरूप पर भलीभांति विचार करके उनको पृथक्-पृथक् समझ लेता है और वह श्रेष्ठ-बुद्धि मनुष्य श्रेयो हि-परमकल्याण के साधन को ही प्रेयसः भोगसाधन की अपेक्षा श्रेष्ठ समझकर ग्रहण करता है परन्तु मन्दबुद्धि वाला मनुष्य लौकिक योगक्षेम की इच्छा से प्रेयः वृणीते-भोगों के साधन रूप प्रेय को अपनाता है। उपर एक बात और कही गई है कि परब्रह्म-परमात्मा परोक्षज्ञान अर्थात् शास्त्रीयज्ञान से नहीं मिलता। वह उसी को मिलता है जिस पर गुरु महाराज के माध्यम से परब्रह्म-परमात्मा स्वयं कृपा करता है। गुरु कृपा करके जिज्ञासु साधना में प्रवृत्त करता है और जिज्ञासु को परमात्मा का अपरोक्षावबोध प्राप्त करता है। इसी बात को कठोपनिषद् कितनी ही स्पष्टता से वर्णन करता है।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो, न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यमेवेष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥

(कठोपनिषद् 1/2/23 व मुण्डकोपनिषद् 3/2/3)

परब्रह्म परमात्मा न तो प्रवचन से, न बुद्धि से और न ही बहुत सुनने से ही प्राप्त हो सकता है। वस्तुतः यह जिसको स्वीकार कर लेता है, उसके द्वारा ही यह प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि यह परमात्मा उसके लिये अपने यथार्थ स्वरूप को प्रकट कर देता है। यहां तक एक प्रश्न गुरु के लक्षण की चर्चा की गई है। दूसरे प्रश्न का उत्तर हमें भगवान् श्रीकृष्ण गीता में इस प्रकार देते हैं।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

(श्रीमद्भगवद्गीता-4/34)

तत्त्वदर्शी ज्ञानी उस ज्ञान का उपदेश तब देते हैं जब आत्मजिज्ञासु उनके समक्ष विनीत भावापन्न होकर प्रश्न रूप जिज्ञासा करे। ज्ञानी अपनी ओर से बिना पूछे-ताछे ज्ञान का प्रवचन नहीं करते। जो बड़ी-बड़ी सभाओं में हजारों-लाखों की भीड़ में भाषण-प्रवचन करते हैं, उनका लक्ष्य आत्मकल्याण न होकर धनार्जन करना होता है। वे कभी भी आत्मज्ञानी अभिधान से अभिहित नहीं हो सकते। ऐसे उपदेशक वाचकज्ञानी हैं, शास्त्रज्ञानी हैं, आत्मज्ञानी नहीं। स्वामी रामचरण ने अत्यन्त स्पष्टता से कहा है-

बूझ्यां सूं चरचा करै, छांड्यां बाद विवाद।
रामचरण ये लछ लियां, रामसनेही साध॥

नारदभक्तिसूत्र में भी वाद-विवाद का निषेध किया गया है। वाद-विवाद करने से बुद्धि पांडित्य बघारने के चक्कर में उलझ जाती है। साधना उससे छूट जाती है।

''वादोनावलम्व्य''

प्रारम्भ में हमने लिखा है कि आत्मजिज्ञासु को उस पथ का अनुसरण करना चाहिये जिस पर चलकर उसको आत्मा का, परमात्मा का अपरोक्षानुभव हो सके। वस्तुत: परब्रह्म-परमात्मा स्वानुभूति का ही विषय है। यह स्वानुभूति जिस मार्ग से, तरीके से, पद्धति से, मार्ग से हो सकती है, वही 'साधना' कही जाती है। जिसने परमात्मा को जिस रास्ते से, रीति से, पद्धति से, विधि से प्राप्त किया उसने उसी को श्रेष्ठतम स्वीकार करके अन्य साधनाओं को अनुपादेय बताया है। श्रीमद्भगवद्गीता दो निष्ठाओं की चर्चा करती है।

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम॥

(श्रीमद्भगवद्गीता 3/3)

हे अनघ-निष्पाप अर्जुन! इस लोक में मेरे द्वारा पुराकाल में दो निष्ठाओं का प्रकाशन हुआ है। सांख्ययोगियों के लिये ज्ञानमार्ग जबकि कर्मयोगियों को कर्मयोग का उपदेश मेरे द्वारा हुआ है। श्रीमद्भागवद् में इससे भिन्न बात कही गई है।

न साधयति मां योगो न सांख्य धर्म उद्धव।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता।
भक्त्याहमेकयाऽग्राह्या: श्रद्धयाऽऽत्मा प्रिय: सताम्।
भक्ति पुनाति मन्निष्ठा श्वपाकानपिसम्भवात्॥

(श्रीमद्भागवद् 10/14/20-21)

श्री कृष्ण कहते हैं, जिस प्रकार मेरी दृढ़ भक्ति मुझे वश में करती है उस प्रकार मुझको योग, ज्ञान, धर्म, स्वाध्याय, तप और त्याग वश में नहीं कर सकते। संतों का प्रिय आत्मा रूप मैं केवल श्रद्धायुक्त भक्ति के द्वारा वश में हो सकता हूँ, मेरी भक्ति चाण्डाल आदि को भी पवित्र हृदय बनाने में समर्थ है।

भागवत्महापुराण के अनुसार भक्ति नौ प्रकार की है। (1) श्रवण, (2) कीर्तन, (3) स्मरण, (4) पादसेवन, (5) अर्चन, (6) वंदन, (7) सख्य (8) दास्य और (9) आत्मनिवेदन। श्रवण भक्ति के द्वारा राजा परीक्षित ने मोक्ष की प्राप्ति की। कीर्तनभक्ति का आदर्श शुकदेवमुनि को माना गया है। उन्होंने राजा परीक्षित् को भगवदुणकीर्तन-कथन कर सात दिन में ही भगवत्प्राप्ति करा दी। स्मरणभक्ति का आदर्श भक्तप्रवर प्रह्लाद को, पादसेवन भक्ति की प्रवर्तिका भगवती लक्ष्मी को, पूजनभक्ति महाराज पृथु, जिनके कारण भूमि की संज्ञा पृथिवी हुई तथा जो शासन व्यवस्था व खेती-बाड़ी व्यवस्था को प्रारम्भ करने वाले भी कहे गये हैं, से आदर्श प्राप्त करके नवधा भक्ति में परिगणित हुई, वन्दनभक्ति के आदर्श अक्रूर, दास्यभक्ति के आचार्य हनुमानजी महाराज, सख्य के आदर्श अर्जुन और सर्वस्वार्पण में सर्वाग्रगण्य दैत्यराज बलि को माना जाता है।

कई बार कई विचारक इन्हें भक्ति की सीढ़ियां कह देते हैं किन्तु ऐसा मानना भ्रमपूर्ण है। यदि ये भक्तिमार्ग की श्रेणियां होती तो प्रारम्भिक आठ अंग व अंतिम आत्मनिवेदन अंगी होती तथा स्वतंत्र न होती किन्तु ये नवों भक्तियां स्वतंत्र हैं। इन प्रत्येक से अनेक भक्तों को भगवद्प्राप्ति हुई है। अत: ये भक्ति की सीढ़ियां न होकर भक्ति के प्रकार ही हैं।

श्रवण कीर्तनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्॥

(श्रीमद्भागवत 1/5/23)

उदाहरणानि-

श्रीविष्णो: श्रवणे परीक्षिद् भवद् वैयासकि: कीर्तने।
प्रह्लाद: स्मरणे तदङ्घ्रि भजने, लक्ष्मीपृथु: पूजने।
अक्रूरस्त्वभिवन्दने कपिपतिर्दास्येऽथ सख्येऽर्जुन:।
सर्वस्वात्मनिवेदने वलिरभूत् कृष्णाप्तिरेषां परम्॥

श्रीमद्भगवत्-पुराणेक्त उक्त नवधा भक्ति को वैधी भक्ति भी कहा जाता है। इसमें विधि निषेध रहता है।

इसलिए इसको वैधी भक्ति कहते हैं। कई बार उन भक्तियों में शरीर तो क्रिया में संलग्न रहता है किन्तु मन यत्र-तत्र भ्रमण करता रहता है। इस कारण ये नव प्रकारीय वैधी भक्तियां यांत्रिक जैसी हो जाती हैं। जब इन भक्तियों में रागात्मक भाव जुड़ जाता है तब ये ही भक्तियां रागानुराग हो जाती है।

जांभोजी के सबदों का बारीकी से अध्ययन करने पर ज्ञान होता है कि उन्होंने सबदों में कहीं भी भक्ति शब्द का प्रयोग पारिभाषिक रूप में किया हो, ज्ञात नहीं होता। फिर भी उनके सबदों में उक्त नव प्रकारीय भक्तियों में से एक-दो को छोड़कर सभी भक्तियों का वर्णन मिल जाता है।

भक्तों का भगवान् के गुणों, महिमा, चरित्रों को गुरु, उपदेशक, संतों से सुनना ही श्रवण है। जब तक किसी के गुणों का, महिमा का, चरित्रों का श्रवण नहीं होगा। तब तक उस श्रवणीयतत्त्व के प्रति न रति उत्पन्न होती है और न ही श्रद्धा उत्पन्न होती है और जब तक श्रद्धा व रति नहीं होती तब तक श्रवण श्रवणभक्ति में परिवर्तित नहीं होता। श्रीमद्भगवद् में यही कहा गया है। 'श्रद्धारति भक्तिरनुक्रमिष्यति' बिश्नोई संतों ने रुक्मिणीमंगल, प्रह्लाद चरित्र और अनेक भक्तों के भक्तमाल के माध्यम से गुण, महिमा, चरित्रों का कथन किया है। जिसको बिश्नोई साधक संतों के मुख से बड़ी ही श्रद्धा के साथ सुनते हैं। वस्तुत: जब तक साधक के द्वारा किसी भी तत्व के बारे में सुनकर अथवा पढ़कर कुछ भी नहीं जाना जाता तब तक उस तत्व की जिज्ञासा होती ही नहीं। श्रवण ही वह साधन है जिसके द्वारा जिज्ञासितव्य तत्व की ओर आकर्षित हुआ जाता है।

गुरु जाम्भोजी ने सबद संख्या 12 में कहा है 'मोरा उपख्यान वेदूं कण तत भेदूं (१) सासत्रे पुस्तके लिखणा न जाई। (२) मोरा सबद खोजो ज्यूं सबदे सबद समाई(३)। मेरा कथन वेद-कथन है जो कण-कण अशेष ज्ञातव्य बातों के भेद को रहस्य को बताता है। मेरा कथन सुनने के उपरांत कुछ भी ज्ञात करने को शेष नहीं रहता। मेरा ज्ञान शास्त्र अथवा पुस्तकों में लिखा जाने योग्य नहीं, अनुभव का विषय है। मेरे वचनों को खोजो-जानो, जिससे कि शब्द, शब्द में समा जाय। वस्तुत: निर्गुणी संतों ने शब्द को ही ब्रह्म माना है। वैयाकरण भी शब्द को ही ब्रह्म बताते हैं। स्वामी रामचरण जी ने कहा है 'सबद सरूपी ब्रह्म उपज विनसेऊ नाहीं' ब्रह्म शब्द स्वरूपी है, वह उपजता व विनशता नहीं है। दूसरी ओर आत्मा भी ब्रह्म ही है ऐसा केवलाद्वैत का डिण्डिम घोष है। 'ब्रह्मसत्यजगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मेव नापर:।' ब्रह्म सत्य है। जगत् मिथ्या है। जीव व ब्रह्म एक हैं, भिन्न-भिन्न नहीं। गुरु जाम्भोजी ने सबद का सबद में समाना लिखा है। जिसका तात्पर्य है अंश आत्मा का अंशी परमात्मा में समा जाना। एकाकार तब ही संभव है जब दोनों में सजातीयत्व हो जबकि विजातीयत्व न हो। स्वामी रामचरण जी ने भी कहा है-

'जीव ब्रह्म का अंश है, ज्यूं रवि का प्रतिबिंब होय।
घट पड़दा दूरा भया, जीव ब्रह्म नहिं दोय॥

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है-

ईश्वर अंस जीव अविनासी।
चेतन अमल सहज सुखरासी॥

दूसरी भक्ति कीर्तन है। गुरु जाम्भोजी के सबदों का गायन, विष्णु के नाम, गुण, चरित्र, महिमा का उच्च स्वर में गायन, इतना ही नहीं भगवत्स्वरूप भक्तों की महिमा, चरित्र आदि का कीर्तन भी कीर्तन भक्ति के अन्तर्गत आता है। अनेक जांभाणी कवियों ने विष्णु व विष्णु भक्तों के चरित्र लिखे है। जिनका कीर्तन कथन किया जाता है। सबद 45 में गुरु जांभोजी कहते हैं- हे आयस्! हे योगी! क्यों तो तूं शरीर पर राख मल रहा है और क्यों भूतों व मसानों की साधना कर रहा है? तेरी ये सारी क्रियायें बिना विष्णु के कीर्तन किये वैसे ही व्यर्थ है जैसे औंधे रखे हुए घड़े पर पड़ने वाली मूसलाधार वर्षा भी घड़े के अंदर एक बूंद पानी भी घुसाने में असमर्थ रहती है। सार बात विष्णु का कीर्तन है। यथा 'आयसा! काहै काजै खेह भकरूड़े, सेवो भूत मसाणी। (१,२) घड़ै ऊंधै बोह बरसत मेहा (३) तिहमां किसन चिरत विणि पड़्यौ न पड़िसी पाणी। (४,५)

श्रवण के सम्बन्ध में गुरु जांभोजी एक-दूसरे सबद में कहते हैं। सबद १९। २५-२८॥ गुरु का सबद ज झीणी बाणी, दूर्‌याँ हीं तै दूरि सुणीजै॥२५-२९॥ सो सबद गुणां कारूं गुणा पारूं, गुणां सारूं वळे अपारूं॥२७-२८॥ गुरु के सबद-वचन अतीव सूक्ष्म हैं वे दूरातिदूर भी सुने जा सकते हैं। उनको सुनने का प्रयत्न करो। सुनो। वे सबद अनंत सद्गुणों के भण्डार हैं। साथ ही वे सबद कायिक गुणों से अतीत हैं। ब्रह्मरूप हैं। वे सबद चित्रण गुणों के सारस्वरूप हैं। बल में अपार हैं अर्थात् उनको सुनने को अपार बलशाली पापपुंज समाप्त हो जाते हैं। जीवात्मा

निर्मल होकर निष्पाप होकर ब्रह्म रूप हो जाता है।

नवधा भक्ति में तीसरा क्रमांक स्मरण भक्ति का आता है। वस्तुत: यही वह भक्ति है जिसमें अन्य आठों भक्तियां स्वत: समाविष्ट होती हुई सी जान पड़ती है। कलियुग में भगवन्नामस्मरण ही वह साधन है जिससे परमात्मा का साक्षात्कार होता है। वेद, पुराण, गीता, इतिहास, संतवाणी सभी में भगवन्नामस्मरण को ही सर्वश्रेष्ठ साधन बताया गया है।

ऋग्वेद में कहा गया है-

'मनामहे चारू देवस्य नाम।' १/२४'

हम अमर देवों में से किसी देव के सुन्दर नाम का स्मरण करें।

'मर्ता अमर्तस्य ते भूरि नाम मनामहे' ८/११/१५

आपके विराट् अविनाशी नाम का हम चिन्तन करते हैं। यजुर्वेद में कहा गया हैं- **'यस्य नाम महद्राश:'** ३२/३

यहां परमात्मा के नाम और यश को बड़ा माना है।

सामवेद में कहा गया है-

'सदा ते नाम स्वयशो विविक्मि' २०/३/१०, १७, ८८।

यश को बढ़ाने वाले आपके स्त्रोतों का हम पाठ करते हैं।

योगदर्शन में कहा गया है-

'तस्य वाचक: प्रणव:।' १/२७

उस परमात्मा का वाचक (जिससे वाच्य यहां परमात्मा को जाना जाये) ॐ है।

तज्जपस्तदर्थभावनम्॥१/२८॥

उस ॐकार का जप उसके अर्थ स्वरूप परमेश्वर का चिंतन करते हुए करना चाहिये। स्वामी रामचरण जी ने भी कहा है।

राखै सुरति सबद ही माहीं।
सबद छाँड़ि कहुँ अंत न जाहीं॥

सुरति-चित्त की वृत्ति को शब्द में समाहित करके रखनी चाहिये। ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि सुरति शब्द को छोड़कर यत्र-तत्र दौड़े ही नहीं। निम्न साधन करने से सुरति शब्द से ही जुड़ी रहती है।

आसण अडिग जमाय कै, कह सांसउ सांसा राम।
अपणा ही श्रवणा सुणैं, तब सुरति रहै इक ठाम॥१॥
दूजा कोई ना सुणै, भल बैठ्या रहौ पास।
रामचरण ईं रैस सूं, दृढ़ता गहै उपास॥२॥

वृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है-

आत्मा वा अरे दृष्टव्य: श्रोतव्यो।
मन्तव्यो निदिध्यासितव्य॥ ४/५/६

वह परमात्मा ही दर्शन करने योग्य, सुनने योग्य, मनन करने योग्य और ध्यान करने योग्य है। सुनना (श्रवण), मनन-निरंतर चिन्तन अथवा स्मरण व अंत में स्मर्तव्यतत्व का व्युत्थानरहित एकाकार होकर ध्यान।

छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है- ये सब नाम ही है। अत: हे नारद! तुम नाम की ही उपासना करो। जो व्यक्ति नाम रूप ब्रह्म की उपासना करता है उसकी जहां तक गति होती है वहां तक इच्छानुसार गति हो जाती है।

स यो नाम ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्नामो गतं।
तत्रास्य यथाकामाचायो भवति॥ ७/१/४-५

श्रीमद्भगवद्गीता में तो भगवन्नामस्मरण के लिये कई स्थानों पर कहा गया है-

तस्मात्सर्वेषुकालेषु मामनुस्मरयुध्यच।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम्॥ ८/७

इसलिये हे अर्जुन! तूं सब समय निरंतर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर। इस प्रकार मुझमें अर्पण किये हुए मन बुद्धि से युक्त होकर तूं नि:संदेह मुझको ही प्राप्त होगा।

भगवान श्री कृष्ण ने दशम् स्कंध में अपनी विभूतियाँ बताई हैं। अनेक यज्ञों में से नामस्मरण यज्ञ को अपनी विभूति बताई है।

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालय:। १०/२५

यज्ञों में जपयज्ञ व स्थिर रहने वालों में हिमालय मैं हूँ।

अनन्यचेता: सततं यो मां स्मरति नित्यश:।
तस्याहं सुलभ: पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिन:॥ ८/१४

हे अर्जुन! जो पुरुष मुझमें अनन्यचित्त होकर सदा ही निरंतर मुझ पुरुषोत्तम को स्मरण करता है उस नित्य निरंतर मुझमें युक्त हुए योगी के लिये मैं सुलभ हूँ अर्थात् उसे सहज ही में प्राप्त हो जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में और भी अनेक श्लोक हैं। ब्रह्मसूत्र भी स्वस्वरूप का, परमात्मा का ध्यान करने का विधान करता है। (ध्यानाच्च ४/१/८)

क्रमश: अगले अंक में....

-ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल
सम्पादक, श्रीरामस्नेही संदेश
60/60, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर
मो.: 9351503551

किरण बिश्नोई ने कॉमनवैल्थ खेलों में लहराया परचम

हौसले बुलन्द और कुछ कर गुजरने की हो गहन लालसा तो कछ भी असम्भव नहीं होता। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है 02जनवरी, 1992 को हरियाणा जिला हिसार के गाँव रावतखेड़ा में जन्मी किरण गोदारा सुपुत्री श्रीमती गीता एवं श्री कुलदीप सिंह गोदारा ने। स्नातकोत्तर पास किरण गोदारा बिश्नोई ने गोल्ड कोस्ट आस्ट्रेलिया में आयोजित कॉमनवैल्थ खेल चैम्पियशिप 2018 में 76 कि.ग्रा. भार वर्ग की कुश्ती में कांस्य पदक जीतकर शान से भारत माता का भाल ऊँचा किया। इस भार वर्ग में किसी भारतीय द्वारा जीता गया यह प्रथम पदक है। इस उपलब्धि पर भारतीय गणतन्त्र के महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, भारतीय खेल संघ के अध्यक्ष, हरियाणा के मुख्यमन्त्री और स्वास्थ्य एवं खेल मन्त्री ने किरण को फोन पर बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इसी वर्ष (2018) भिवानी में आयोजित भारत केसरी दंगल में भारत केसरी का खिताब अपने नाम किया है।

किरण गोदारा की अब तक की उपलब्धियाँ इस प्रकार से हैं :-

1. 2017 में दक्षिण अफ्रीका के जॉन्सबर्ग में आयोजित कॉमनवैल्थ खेल चैम्पियशिप में 72 कि.ग्रा. भार वर्ग की कुश्ती में स्वर्ण पदक जीत कर शान से भारत माता का भाल ऊँचा किया।
2. 2016 में थाईलैण्ड में आयोजित सीनियर एशियन कुश्ती चैम्पियशिप 2016 में 72 कि.ग्रा. भार वर्ग में भाग लिया।
3. 2016 में ही 75 कि.ग्रा. भार वर्ग बेला रूस में आयोजित रियो ऑलम्पिक क्वालीफाई कर 5वां स्थान प्राप्त किया।
4. वर्ष 2012 में 72 कि.ग्रा. भार वर्ग में थाईलैण्ड में आयोजित वर्ल्ड चैम्पियशिप में भाग लिया।
5. 2012 में 72 कि.ग्रा. भार वर्ग में कजाकिस्तान में आयोजित जूनियर एशिया चैम्पियशिप में कांस्य पदक जीतकर समाज और देश का नाम रोशन किया।
6. 19 से 21 जनवरी, 2015 तक भारतीय विश्वविद्यालय संगठन द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र में आयोजित महिला कुश्ती में 69 कि.ग्रा. भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर कनाडा आयोजित होने वाले 75 कि.ग्रा. भार वर्ग में कॉमनवैल्थ कुश्ती चैंपियनशिप के लिये चयन पक्का किया।
7. 2011 में खेलना आरम्भ किया और पीछे मुड़कर नहीं देखा। सन् 2012 में 72 कि.ग्रा. भार-वर्ग में कज़ाकिस्तान में आयोजित कनिष्ट एशिया चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीतकर माता-पिता, समाज एवं हरियाणा का सम्मान से सिर ऊँचा किया। उसके बाद पहली बार विश्व स्तरीय खेलों में 2012 में 72 कि.ग्रा. भार वर्ग में ही थाईलैण्ड में आयोजित कनिष्ट विश्व चैम्पियनशिप में भाग लिया।
8. 2012 में 67 कि.ग्रा. भार वर्ग में झारखण्ड में आयोजित कनिष्ट राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीता और देश में हरियाणा का नाम रोशन किया।
9. इसी प्रकार 2014 में 75 कि.ग्रा. भार वर्ग में गोण्डा (उत्तर प्रदेश) में आयोजित राष्ट्रीय सीनियर कुश्ती चैम्पियनशिप में तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक जीतकर हरियाणा का नाम रोशन किया।

10. 2013 में 72 कि.ग्रा. भार वर्ग में कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में आयोजित राष्ट्रीय सीनियर कुश्ती चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीतकर हरियाणा का मान बढ़ाया।
11. 2012 में एक बार फिर से 72 कि.ग्रा. भार वर्ग में गोण्डा (उत्तर प्रदेश) में आयोजित राष्ट्रीय सीनियर कुश्ती चैम्पियनशिप में तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक जीतने में कामयाब रही।
12. 2012 में ही 67 कि.ग्रा. भार वर्ग में अमरावती विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश) में आयोजित ऑल इण्डिया विश्वविद्यालय कुश्ती चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीत कर तृतीय स्थान प्राप्त किया।
13. 2012 में ही 67 कि.ग्रा. भार वर्ग में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ (उत्तरप्रदेश) में आयोजित ऑल इण्डिया विश्वविद्यालय कुश्ती चैम्पियनशिप में भी तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक अपने नाम कर देश में हरियाणा का नाम चमकाया।

अब तक इस प्रकार के सम्मान प्राप्त करने वाले होनहार खिलाड़ी को हरियाणा की सरकार उप-पुलिस अधीक्षक के पद पर सरकारी सेवाएं प्रदान कर ऐसे होनहारों का सम्मान करती रही है। देखना यह है कि इन्हें ये सम्मान कब मिलता है। इनकी इस उपलब्धि के मध्य नजर भारत सरकार के रेल मन्त्रालय ने इन्हें रेलवे में टिकट चैकर के पद पर नियुक्ति प्रदान की है।

किरण के मन में बचपन से ही उसके दिल में कुछ कर दिखाने का एक जुनून समाया हुआ था। किरण ने बताया कि माता-पिता और नाना स्व. श्री रामस्वरूप जी खीचड़ की प्रेरणा के साथ-साथ जब भी वह दूरदर्शन पर कुश्ती प्रतियोगिता होते हुए देखती थी तो उसके मन में भी एक कुश्ती क्षेत्र की पहलवान बन कर समाज एवं गुरुजनों तथा भारत माँ का नाम रोशन करने की ललक जाग उठती थी। महिला पहलवान किरण बिश्नोई वर्ष 2011 से हिसार स्थित महाबीर स्टेडियम में अपने कुश्ती खेल कोच श्री विष्णुदास जी के मार्गदर्शन में निरन्तर अभ्यास कर रही हैं। इन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय उपलब्धियों के साथ- साथ अपनी स्नातक तथा राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर शिक्षा भी प्राप्त कर चुकी है। इनका जन्म एक संस्कारवान परिवार में हुआ है और इनके नाना श्री रामस्वरूप जी खीचड़ एवं नानी जी के अति उत्तम संस्कारों का प्रभाव भी इन पर पड़ा है।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई, हिसार

मो.: 9467694029

1857 की क्रांति और बिश्नोई समाज

1857 का स्वतंत्रता संग्राम आधुनिक भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। इस घटना से ठीक सौ साल पहले बंगाल के नवाब सिराजुदौला की प्लासी के युद्ध में पराजय के बाद भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी या अंग्रेजी सरकार का नियंत्रण हो गया था परन्तु भारतीयों ने कभी उसे दिल से स्वीकार नहीं किया। उन्हें शुरू से ही देश के अलग-अलग, यहां तक कि सुदूर भागों से संन्यासियों, किसानों, मजदूरों, कारीगरों, सैनिकों, सामन्तों, साहूकारों, गरीबों-अमीरों द्वारा अलग-अलग मगर निरन्तर चुनौतियां मिलती रही। संन्यासी विद्रोह, अफीम, नील, किसानों का विद्रोह, नमक कारीगरों का विद्रोह, चेरो विद्रोह, भील विद्रोह, चकमा विद्रोह की लम्बी शृंखला में बिश्नोई विद्रोह भी भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास का 'सुनहरी पृष्ठ' है, जो तत्कालीन बिश्नोई आबादी वाले गांवों में प्रकट हुआ। अंग्रेजी राज स्थापित हो जाने के बाद जमींदार, कृषक तथा शिल्पी सभी बर्बाद हो गये।

तीर्थ स्थानों पर आने-जाने पर लगे प्रतिबन्धों से संन्यासी क्षुब्ध हुए। संन्यासियों की अन्याय के विरुद्ध लड़ने की लम्बी परम्परा थी। संन्यासी विद्रोह का सारा विवरण वन्देमातरम् (बंकिमचन्द्र चटर्जी) उपन्यास में मिलता है।

1857 के आते-आते भारत की जनता का सब्र टूटने लगा। लगातार वर्षों से चल रहा असन्तोष अन्त में पूरे देश में सशस्त्र महाविद्रोह के रूप में फूट पड़ा-

चवदै साल बैसाख सुदी में बरत्यो समै राग सकल बुधी मे।
डिग्यो राज भद्र अंगरेजां डिगता कछुव नै लागी जेजा॥[1]

इस क्रान्तिकारी विद्रोह ने अंग्रेज हुकूमत को हिलाकर रख दिया। 5 सितम्बर, 1857 को अर्नेस्ट जोन्स ने लिखा- 'हिन्दुस्तान के विद्रोह के बारे में सारे देश में एक ही राय होनी चाहिए। विश्व में जितने भी विद्रोह हुए हैं उनमें सबसे ज्यादा न्यायपूर्ण, भद्र और आवश्यक यह विद्रोह है।'[2]

1857 का यह विद्रोह अकस्मात नहीं हुआ था। यह अग्नि 27 फरवरी, 1857 को बहरामपुर में प्रज्ज्वलित हुई। असंतोष के परिणामस्वरूप उत्पन्न यह अग्नि अज्ञात एवं अनाम जनता के हृदय की गहराइयों में प्रविष्ट होकर धधकने लगी। अन्याय व अधर्म इस असंतोष का मूल कारण था-

अधरम राज करत है जब ही देत दण्ड प्रमेसुर तबही।[3]

यह विद्रोह स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष था या फिर विभिन्न वर्गों, समूह के हितों की रक्षार्थ, इस पर मतैक्य नहीं है। कुछ इसे सैनिक, कुछ धार्मिक, कुछ आर्थिक व जातीय हितों की रक्षा का विद्रोह मानते हैं।

डॉ. एस.एस. सेन का कथन है कि यह स्वतन्त्रता संग्राम ही था। उनका तर्क है कि क्रान्तियां प्राय: एक छोटे से वर्ग का कार्य होती है। जिसमें जनता का समर्थन होता है, भी नहीं थी।[4]

परन्तु इस विद्रोह में देश के सभी भागों में उच्च-निम्न, आदिवासी-सभ्य, कृषक-गैर कृषक जातियां शामिल हुईं। एक प्रकार से यह विदेशी सत्ता, उसके अन्याय, अत्याचार, शोषण, अधर्मपूर्ण शासन के प्रति प्रतिकात्मक विद्रोह था। कमल का फूल और चपाती इस विद्रोह का प्रतीक चिह्न बनी।

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस समय देश में चारों ओर धार्मिक असन्तोष का वातावरण व्याप्त था। चपाती प्रकरण में चपाती इसलिए वितरित की गयी थी कि भारतीयों को यह बात समझ में आ जाए कि उन्हें वही खाने को दिया जाएगा जो इसाई खाते हैं। अर्थात् सभी भारतीयों को सजग हो जाना चाहिए कि उन्हें इसाई बनाया जाएगा।[5]

19वीं, सदी तक आते-आते सिपाहियों की प्रिय बंदूक 'ब्राउन बेस' के स्थान पर नवीन 'इनफील्ड राइफल' का प्रयोग होना शुरू हो गया था। इन राइफलों में विवादास्पद कारतूसों के मामले ने जोर पकड़ा व सुअर की चर्बी की चर्चा से सिपाहियों में अत्यधिक रोष फैल गया।

नई खोजों के अनुसार प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन हरियाणा के अम्बाला से 10 मई, 1857 को प्रारम्भ हुआ। पिनगवां के सद्रुदीन, रेवाड़ी के राव तुलाराम और गोपाल देव, जनरल अब्दुस्सयद खान, महमूद अजीम बेग, राव

किशन सिंह, राव रामलाल, हांसी के लाला उदमीराम इत्यादि असंख्य ज्ञात-अज्ञात लोकनायकों ने इसमें हिस्सा लिया। यह ज्यादा महत्वपूर्ण है कि सामान्य किसान, स्थानीय सैनिक और स्थानीय नेतृत्व विद्रोह के अग्रिम मोर्चे पर थे।

जून 1857 तक सम्पूर्ण हरियाणा ब्रिटिश प्रभाव से मुक्त हो गया था। अंग्रेजों को हरियाणा पर पुनः अधिकार स्थापित करने में छह माह का समय लग गया, यह भी तब जब देशी राजाओं ने स्वकीयों का साथ न देकर अंग्रेजों का साथ दिया।

यह भारत पर अधिकार करने वाले अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय घोषणा, धार्मिक भेदभाव और सैनिक असंतोष का संयुक्त रूप था। मुसलमानों और हिन्दुओं ने पुरानी धार्मिक घृणा भुलाकर इसाईयों के खिलाफ हाथ मिलाया। विदेशियों के प्रति घृणा और आतंक उस महान् विद्रोह आन्दोलन के प्रेरक थे।[6]

बिश्नोई संतों और कवियों द्वारा रचित काव्य सिर्फ आध्यात्मिक महत्व का ही नहीं है अपितु सामाजिक व ऐतिहासिक महत्व का भी है। जांभाणी साहित्य तत्कालीन समाज का दर्पण है। यह भी दर्शाता है कि ये संत कवि राष्ट्र व राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति कतई उदासीन न थे।

बिश्नोई संत कवियों ने विदेशी शासकों के विरुद्ध बगावत का झण्डा बुलन्द करने को धार्मिक कृत्य माना तथा राष्ट्रप्रेमी विद्रोहियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

विदेशी शासकों के प्रति संघर्ष 'सम्वत् उन्नीस सौ चौदह की गदर' में संत साहबरामजी लिखते हैं-

अब एक कथा अजब एहगावो। बिश्नोइयों का धरम बतावौ।
चवदै साल बैसाख खुदीभै बरत्यौ समै जंग सकल बुधीमै।
डिग्यो राज अंग्रेजा, डिगता कुछव न लागी जैजा।[9]

संत साहबराम जी ने भारत में अंग्रेज बहादुर के राज को अधर्म पर आधारित बताया तथा उनके प्रति विद्रोह को परमेश्वर का दण्ड बताया-

अधरम राज करत है जब ही। देत दण्ड प्रमेसुर तबही।[10]

अंग्रेज राज छल कपट पर आधारित था। भारतीयों में आपसी फूट डालकर राज करना चाहते थे। यह बात तत्कालीन संतों से छुपी न थी। संत साहबराम जी राहड़ जंभसार में लिखते हैं कि-

अंगरेजां कोसल एक करी। एक धरम मन अंछयाधरी।
जितनी फोजां हिन्द कहावौ। कृसतान करो मेरे मन भावै।
बड़ै लाट एसै कहै भाख्या। ठीक बात ऐसे काहे आख्या।[11]

1857 की गदर के समय बिश्नोई तत्कालीन हिसार जिला में बहुतायत में रहते थे। इस क्षेत्र में मुसलमान भी बहुतायत में रहते थे। मुसलमान राज की शह पाकर गोहत्या जैसा घोर अपराध करने लग गये थे, उन्हें रोकने की हिम्मत किसी की भी नहीं पड़ रही थी। बिश्नोई स्वयं गोपालक एवं गुरु जाम्भोजी की कृपा व उपदेश से ओतप्रोत थे।

चिंदड़ जो वर्तमान फतेहाबाद जिले के अंतर्गत आता है, के तालाब पर मुसलमानों की खेड़ पलटन पड़ी थी। एक थके हुए, क्रन्दन करते हुए एक सांड को मार रहे थे और पांच अन्य बंधे हुए थे। यह अन्याय सहन करने योग्य कदापि नहीं था-

जांभोजी को होकम, जिव प्रै तजो पिराण।
चींदड़ा कै जोड़ पर, जुड़े जु मुसलमान॥
सैं चिधेड कै जोडै आयो, मरतो सांड देख मैं ध्यायौ।
मारयो एक बंध्या है पांच, आजहूं उनकै आई न आंच॥[12]

बिश्नोई स्वभाव से मनसा, वाचा, कर्मणा- धीर-वीर व धर्म के प्रति दृढ़ होते हैं। कद-काठी व खान-पान के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यातनाम बिश्नोई जाति के लोग स्वाभाविक रूप से क्रान्तिकारी होते हैं। अतः 1857 की क्रांति के समय विदेशी शासन सत्ता के प्रति इनका क्षोभ प्रभावी रूप में प्रकट हुआ। बिश्नोई सन्त कवि साहबराम जी राहड़ ने अपने ग्रंथ जंभसार में 1857 की क्रांति का यथार्थ व भावपूर्ण चित्रण किया है। इससे प्रमाणित होता है कि सन्त कवि तत्कालीन समाज से कितना सरोकार रखते थे।

1857 की क्रांति में बिश्नोइयों द्वारा बढ़-चढ़कर भाग लेना गुरु जांभोजी महाराज के उपदेशों और विचारों का प्रभाव ही कहा जा सकता है। सन्त साहबराम जी ने 26 गांवों का वर्णन जंभसार में किया है, जहां बिश्नोई काफी संख्या में वास करते थे। इन गांवों का 1857 की क्रांति में

विशेष योगदान रहा है।

ता गावां का नाम बताऊं! जंभसार में सकल चढ़ाऊँ।[13]

इन गांवों का वर्णन जंभसार में हुआ है वे वर्तमान हरियाणा राजस्थान और पंजाब में स्थित हैं। इससे सन्त कवि के व्यापक भ्रमण व भौगोलिक ज्ञान का तो प्रमाण मिलता ही है, साथ ही इतिहास की दृष्टि से भी यह तथ्य महत्वपूर्ण है।

बिश्नोई पंथ राष्ट्राभिमानी और धर्मरक्षक धर्मवीरों का पंथ रहा है। बिश्नोई गांवों में बिश्नोईजनों ने अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया जिससे अंग्रेजों में व्याप्त खौफ का भी वर्णन किया है।

'मची गदर भई हा हा कारा। गयो अंग्रेज उजाड़या सारा।[14]

बिश्नोई समाज के लोगों ने सर्व समाज के साथ मिलकर विधर्मी विदेशी शासकों का मुकाबला किया। वर्तमान आदमपुर क्षेत्र में आदमपुर तीस गांवों के लिए क्रांति का केन्द्र बना। पूरी योजना बनाकर, रशद इत्यादि इकट्ठी करके अंग्रेजों से लोहा लिया। हीरा और सादुल क्रांति के नेता बने।

तीस गांव आदूंपुर आए। जहां हीरो सादुल रहाऐ।[15]
जल अरू अन का भरया भंडारा। जीमै पीवै जै जै कारा।

जिन बिश्नोई गांवों का 1857 की क्रांति में भाग लेने के संदर्भ में नामोल्लेख जंभसार में हुआ है, उनमें चबरवाल अलखपुरा जैसे अत्यन्त छोटे-छोटे गांवों का भी वर्णन हुआ है। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के जिन गांवों और ग्रामीणों ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया, वे इस प्रकार से हैं- झूंपा, लीलस, सेणासा, चिड़ौद, चारनौंद, तलवंडी, रावतखेड़ा, मंगाली, कालवास, गावड़, बड़वा, चौधरीवास, सुखचैनपुर, टोकस, काजला, माजरा, महमदपुर, रूपाणा, किरताण, मलेमा, रामपुरियां, गंगा, वजीतपुरा, सीतो, महराणा, सुखचैनपरा, विस्नपुरा, खैरपुरा, सिरदारपुरा, रायपुर, दुतारांवाली, राजांवाली, हरिपुरा, पनिवाली, चमारखेड़ा, ढाबां, सैरेकां, लखासरियो, डाबला, मुकलावा, रघुनाथपुर, फुलदेसर, रावतसर, काकड़वाला इत्यादि।

क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी सरकार के मर्म पर चोट की। संचार प्रणाली (डाक, तार, रेल) जो अंग्रेजों द्वारा अपने साम्राज्यी हितों की पूर्ति के लिए विकसित की गई थी, पर प्रहार किया। साहबराम जी ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है-

डाक बंध कर दीनी जबही। तूती नाड़ जीवन ही कब ही।[16]
नाड़ गए देही मर जावै। डाक बंध किये राज नसावै।
डाक बंध जबहि उन करी। जिन तिन देशां गदर परी॥

इस प्रकार यह अत्यन्त गौरव का विषय है कि बिश्नोई पंथ जैसे जीवट के धनी भारतीय समाज में विद्यमान हैं जो यह विश्वास व गारंटी के परिचायक हैं कि भारतीय समाज की स्वतंत्रता, अखंडता व धर्म को कोई खतरा नहीं है, होगा तो ये धर्मवीर उनका सामना करने के लिए सदैव तत्पर हैं।

संदर्भः

1. संत साहबराम, जंभसार-2, पृ. 270
2. सुन्दरलाल, भारत में अंग्रेजी राज, पृ. 109
3. संत साहबराम, जंभसार-2, पृ. 270
4. एस.एन. गुप्त, हिस्ट्री ऑफ नेशनल मूवमेंट, पृ. 3
5. यू. नेटिवः नेरेटिव्स ऑफ द म्यूटिनी इन दिल्ली, पृ. 41
6. संत साहबराम, जंभसार-2, पृ. 270
7. वही
8. डॉ. सुरेश मिश्रः रामगढ़ की रानी अवन्तिबाई, पृ. 2
9. संत साहबराम, जंभसार-2, पृ. 270
10. वही
11. वही
12. वही, पृ. 271
13. वही, पृ. 270
14. वही, पृ. 271
15. वही
16. वही, पृ. 270

-डॉ. राजा राम
राजकीय महाविद्यालय
भट्टूकलां (फतेहाबाद)
मो.: 98967-89100

बधाई सन्देश

सनहित सुपुत्र श्री ललित बिश्नोई, निवासी गुड़गांव ने गोल्फ में दो राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं जीती हैं- (1) 2 से 6 अप्रैल को गुड़गांव में आयोजित I.G.U CGCC Junior Open at Classic Golf & Country Club. (2) 9 से 13 अप्रैल को अहमदाबाद में आयोजित I.G.U YES BANK Western India Junior Boys Golf Championship at Kalhaar Blues & Greens. अब आप मई व जून के महीने में मलेशिया एवं सिंगापुर में आयोजित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने जाएंगे।

मनबीर सुपुत्र श्री रामस्वरूप गोदारा, निवासी मोठसरा, जिला हिसार को गुरु जम्भेश्वर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के संचार प्रबन्धन एवं तकनीकी विभाग द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई है। आपने 'गुरु जम्भेश्वर जी महाराज की आध्यात्मिक शिक्षाओं का उनके अनुयायियों में प्रचार-प्रसार' विषय पर अपना शोध प्रबंध लिखा है।

रेनू सुपुत्री श्री सुभाष गोदारा निवासी गांव भाणा, जिला हिसार ने लखनऊ में आयोजित छठी नेशनल जूड़ो चैम्पियनशिप में 48 किलो भार वर्ग में तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

मोनिका गोदारा सुपुत्री श्री सतीश कुमार गोदारा, जिला हिसार, हाल निवासी के-1/4, पुलिस स्टेशन मॉडल टाउन-1, दिल्ली ने गुरु जम्भेश्वर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार की एम.एससी. (बायोटेक्नोलॉजी) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

अजीत गोदारा सुपुत्र श्री सुभाष गोदारा, निवासी गांव भाणा, जिला हिसार ने हिसार में आयोजित दूसरी हरियाणा राज्य खेल प्रतियोगिता में जूडो में 60 किलो भार वर्ग में दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

मनोहर लाल सुपुत्र श्री बाबूलाल, निवासी गांव धमाणा गोलिया, तह. सांचौर, जिला जालौर (राज.) का चयन राजस्थान कबड्डी लीग की टीम में हुआ है। आप कई बार राज्य स्तर की कबड्डी खेल चुके हैं।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

जल विन ज्यांन पलक में जावै

जल की महत्ता एवं उपयोगिता का महिमा मण्डन भारतीय महाकाव्यों, वेदों, पुराणों आदि में सर्वाधिक हुआ हैं। शतपथ ब्राह्मण में जल को अमृत कहा गया है- अमृत वा आपः। वैदिक संस्कृति में नदियों को माँ एवं उनके जल को मोख माध्यम कहा गया है।

अप्सु अन्तः अमृतम् अप्सु भेषजम् अपाम् उत्
प्रशस्तये, देवाः भवत वाजिनः।

जल में अमृत है (ऋग्वेद 1/23/19) जल में औषधी है (ऋग्वेद-1/23/19-2) हे! ऋत्विज्जनों ऐसे शुद्ध एवं श्रेष्ठ जल की स्तुति करने में तत्परता दिखाओ। जल वस्तुतः जीवन है, जीवन का आधार है। जल के बिना जीवन की कल्पना सम्भव नहीं है। जल स्वयं औषधी है। शरीर के दूषित तत्व जल के माध्यम से ही शरीर से निष्कासित होते हैं।

सृष्टि निर्माण के मौलिक तत्त्वों में जल मुख्य घटक है। माता के गर्भ में जिस प्रकार शिशु के चारों ओर कलल रस विद्यमान रहता है, जो शिशु का पोषण, संवर्धन एवं संरक्षण करता है, ठीक उसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड के भी चारों ओर रसज् या कुहुक (कोहरा) स्थित में जल विद्यमान रहता है। जल उत्कृष्ट माता है क्योंकि इससे पर्यावरण का निर्माण ही नहीं वरन् पालन भी होता है। जल समस्त प्रगति का संवाहक भी है। वैदिक साहित्य का 50 प्रतिशत भाग जल तत्त्व का किसी न किसी रूप में उल्लेख करता है।

तीनों लोकों की स्थिति का आधार जल ही है, अर्थात जल-पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक तीनों स्थानों पर व्याप्त हैं। अथर्ववेद में जल की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है कि जिससे बढ़ने वाली वनस्पतियां आदि अपना जीवन प्राप्त करती है, वह जीवन का सत्व पृथ्वी पर नहीं है और न द्युलोक में है अपितु अन्तरिक्ष में है तथा अन्तरिक्ष में संचार करने वाले मेघ मण्डल में तेजस्वी, पवित्र और शुद्ध जल है। जिन मेघों में सूर्य दिखाई देता हो, जिनमें विद्युत रूपी अग्नि कभी व्यक्त कभी गुप्त रूप से दिखाई देती हो, वह जल ही हमें शुद्धता, शान्ति और आरोग्य दे सकता है। वैदिक ऋषियों ने जल के औषधीय स्वरूप से भली भांति परिचित होकर जल को 'शिवतम रस' की संज्ञा देते हैं।

ऋग्वेद का ऋषि प्रार्थना करते हुए कहता है कि हे सृष्टि में विद्यतान जल! तुम हमारे शरीर के लिए औषधी का काम करो ताकि हम नीरोग रहकर चिरकाल तक सूर्य का दर्शन करते रहे, अर्थात् दीर्घायु हो। अथर्ववेद में पृथ्वी पर शुद्ध पेयजल के सर्वदा उपलब्ध रहने की ईश्वर से प्रार्थना की गई है-

शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु यो नः सेदुरप्रिय तं नि दध्मः।
पवित्रेण पृथिवी मोत् पुनामि।

भारतीय मनीषा की दृष्टि में जलस्रोत केवल निर्जीव जलाशय मात्र नहीं, अपितु वरुण देव तथा विभिन्न नदियों के रूप में उसने अनेक देवियों की कल्पना की है। इसीलिए तो स्नान करते वक्त सप्त सिन्धुओं में जल के समावेश हेतु आज भी इस मंत्र का आह्वान किया जाता है-

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी, जल अस्मिन सन्निधिम कुरु।

वेदों में जितना वर्णन इन्द्र या जल के अधिष्ठाता देवताओं का हुआ है, उतना शेष देवताओं का नहीं हुआ है-

जल ही है रस रूप में, जड़ चेतन सब देह।
रोम-रोम में यह रमा, मूल सागर की नेह॥

'पियो जल अरू भये आनन्दा' तथा 'जल विन ज्यांन पलक में जावे' उक्ति के अनुसार- जल वास्तव में पर्यावरण का एक अभिन्न अंग है, मानव की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। जल की अनुपस्थिति में मानव कुछ भी नहीं कर सकता है। मानव शरीर तथा समस्त सजीवों के शरीर का एक बहुत बड़ा हिस्सा जल है अतः स्वच्छ जल के अभाव में किसी प्राणी के जीवन की क्या, किसी सभ्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

जीवन की उत्पत्ति, अस्तित्व एवं विकास हेतु आवश्यक एवं अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध कराने वाला 'पृथ्वी' ब्रह्माण्ड का अब तक का एकमात्र ज्ञात ग्रह है। इस पर जीवन की उत्पति ही ब्रह्माण्ड में पृथ्वी की विशिष्टता संस्थापित करती है क्योंकि इस पर जल है, जो कि इन सबका आधार है।

जल मन्दिर, जल देवता, जल पूजा, जल ध्यान।

जीवन का पर्याय जल, सभी सुखों की खान॥
जल की महिमा क्या कहें, जाने सकल जहान।
बूंद-बूंद बहुमूल्य हैं, दे पूरा सम्मान॥

भारतीय मनीषा में जल भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है-

1. वर्षा जल को ऐन्द्र और दिव्य।
2. नदी एवं नद-गंगा आदि नदियाँ तथा सिन्धु आदि नद कहे गये हैं।
3. समुद्र
4. झील
5. कुआं- कूप तथा वापी यह दो प्रकार का होता है।
6. तालाब-अपुष्करिणी व पुष्कर, सर-जो प्राकृतिक हो, तड़ाग-जो मनुष्यकृत हो।
7. निर्झर
8. औदिभद- सोते का जल।
9. चौड़ा-थोड़ा गहरा और न बंधा हुआ कुआं।
10. विकरी-बालू के नीचे का जल।
11. क्यारी या नहर का जल।
12. पल्लव को गड़ही कहा जाता है।
13. प्रपा-ऋग्वेद में प्याऊ को प्रपा कहा जाता है।

इस प्रकार ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में 14 प्रकार के जल का उल्लेख है, शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में 17 प्रकार तथा आचार्य सायण ने 16 नामों का भाष्य किया है, जल के इन सभी नामों व अलग-अलग रूपों (स्वरूपगत ढांचा) से पर्यावरण की शुद्धि बताई गई है। इसी परम्परा में भारतीय आयुर्वेदज्ञों ने विभिन्न जल के विज्ञान का निरूपण भेदाभेदपूर्वक लिखा है। यथा- धारा जल, समुद्र जल, अनार्तव जल, कारक जल, तौषार जल, हिम जल, आनूप-जल, जांगल जल, साधारण जल तथा नादेय जल।

भारतीय वाङ्मय में सबसे अधिक चर्चित जल एवं जल के देवता है। साहित्य से लेकर परम्पराओं तक भारतीय मनीषियों ने जल और जीवन के तारतम्य को बखूबी समझा और समझाया है। वैदिक साहित्य से लेकर वर्तमान साहित्य तक में जल स्रोतों, जल के महत्त्व, उसकी गुणवता एवं संरक्षण की बात बराबर की गई है। भारतीय साहित्य से लेकर समाज में व्याप्त परम्पराओं तक जल की महत्ता को समझकर उसके संरक्षण एवं संवर्धन की जो बात कही गई है उसका प्रभाव राजस्थान में विक्रम की सोलहवीं शताब्दी में गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रवर्तित विश्नोई पंथ एवं जाम्भाणी साहित्य में प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है।

जाम्भाणी साहित्य एवं बिश्नोई पंथ में जल संरक्षण का एक बेहतरीन इतिहास है। यहाँ जल संरक्षण की एक मूल्यवान, पारम्परिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्परा है। जल को अकाल मृत्यु को हरने वाला, सम्पूर्ण व्याधियों का नाशक तथा पुनर्जन्म से मुक्ति प्रदाता कहकर जल के पर्यावरणीय महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है-

अकाल मृत्यु हरणं, सर्व व्याधि विनाशनम्।
विष्णु पादोदकम् पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते॥

अभिमन्त्रित जल ग्रहण करने से इन सभी का शमन होता है। भारतीय संस्कृति मूलतः आध्यात्मिक हैं। यहां किसी भी शुभ कार्य का आरम्भ और समापन विधिवत् पूजा-पाठ से सम्पन्न होता है। जाम्भाणी परम्परा में भी यह मत स्वीकार्य हैं, यहां पर पूजा हेतु सर्वप्रथम पवित्रीकरण पर बल दिया जाता है और पवित्रीकरण के लिए जल की आवश्यकता है। यहां प्रत्येक शुभ कार्य के आरम्भ में कुम्भ का कलश स्थापित करना, उसमें जल भरना तथा उसे मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित कर 'पाहल' बनाया जाता है।

संतकवि वील्होजी महाराज 'कथा ग्यानचरी' में नदी के जल को सतगुरु की वाणी के सम्मान शांत और पवित्र बताते हुए कहते हैं-

'आयौ वुहौ कहै जे पाणी, ते लाधी सतगुर की वाणी'

(कथा ग्यानचरी-वील्होजी कृत)

यहां तक कि उन्होंने जल को जीवन रक्षक एवं जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के रूप में भी चित्रित किया है-

जल विणि तिसनां न मिटै, अनविणि त्रपति न थाय।
जल सारे वीण्य माछला, जल विण माछ मर जाय॥

(उमाहो वील्होजी कृत)

जाम्भाणी साहित्य में एक संत नदी से प्रार्थना करते हुए उसकी शरण में जाने की अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहता है-

नदी तणौं वेतरणी नांव, जीवन जाण सरणाइ जांव।
देष दूत करि अरदास, मोहि मेल्हौ वेतरणी पास॥

ऊदोजी अडिंग के जीवन में अत्यधिक खुशी होने पर भी जल टपकने लगता है-

नैन सजल जल से भरे, आनंद अंग न समाय॥

(पोथोग्रंथ ज्ञान पृं.-386)

बिना छाने हुए जल का उपयोग जाम्भाणी परम्परा में वर्जित है, जल के नहीं छानने से अनेक जीवों की हत्या का दोष लगता है और वह व्यक्ति पाप का भागी बनकर नरक में वास पाता है-

अणछाण्यौ पांणी वावरै, अवही पाप अनंत करै।
अभष भषयो व बुध्यनास, मुवां पछै दोरमां वास॥

जाम्भाणी साहित्य में यज्ञ के द्वारा पर्यावरण एवं जल संरक्षण पर सर्वाधिक बल दिया जाता है। इस परम्परा के प्रत्येक घर में प्रतिदिन यज्ञ किया जाता है जो पर्यावरण को सुरक्षित एवं पल्लवित करता है। अथर्ववेद में कहा गया है कि यज्ञग्नि से धूम उत्पन्न होता है, धूम से बादल बनते है और बादलों से वर्षा होती है। वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि यज्ञ द्वारा वातावरण में ऑक्सीजन व कार्बन-डाई- ऑक्साइड का सही सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। जाम्भाणी साहित्य में तथा वेदों एवं वेदागों में अनेक स्थलों पर यज्ञ द्वारा वर्षा के उदाहरण मिलते हैं जिसकी भारत सरकार के तत्वावधान में 12 फरवरी, 1976 को हुए भारतीय वैज्ञानिकों के सम्मेलन में पुष्टि की जा चुकी है। इतना ही नही जाम्भाणी साहित्य मनीषी संतकवि इन्द्र से स्तुति करके भी वर्षा करते है। जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह के साथ दुरगदास द्वारा महात्मा सुरजनदास पूनिया से मेह (वर्षा) का परचा मांगने पर खड़े होकर उन्होने 'गुड़े बंब निसांण' गीत गाकर वर्षा करवाई, जिसे दुष्काल दूर हुआ। राजा ने प्रसन्न होकर उनकी इच्छानुसार परवाना जारी किया। (जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य भाग-2, पृ. 765)

इतना ही नहीं संतकवि पूनिया के फलौदी और जैसलमेर में भी वर्षा करवाने की बात प्रचलित है। जिसके समर्थन में सुरजनदास जी का एक कवित्त भी कहा जाता है-

कर घटा कूंजरे, दरक कोरण घर बारे।
असलूंब आरम्भ, धज वीजळ षग धारे।
महर मोज झड़ लाय, कहर उपकार करंतां।
अमी धार ओसर्‌यौ, षीर वूठो कवि षेतां।
सो भीजै राळ गिगन छत्र, धज रज बांधियो सेल घर।
गरजियौ तम जेसांण धरा, इन्द्र गात बूठ्यो अंमर।

(जाम्भोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, भाग-2)

जून 2009 में भारतीय वैज्ञानिकों ने उतर प्रदेश के उन्नाव जिले के कुछ खेतों में वैदिक ऋचाओं के समवेत गायन के कैसेट बजाने से पैदावार में 2 से 3 गुणा तक अधिक वृद्धि लक्षित की है।

पदम भगत वर्षा जल के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए उसे काल के साथ जोड़ते हैं-

खेत सूके बिरखा भई, अमृत वर्षा नीर।
मीन मर्‌या सागर भरे तो, कोन काज बलवीर॥

कवि ने यहां पर समय पर वर्षा होना अमृत के समान बताया है। कथा भाडली पुराण में जल चक्र परिसंचरण के घटक बादल का महत्त्व उनके आकार को देखकर बताया गया है-

आषाढी पून्यौ रो-एक पौहर बादल हुव तो च्यारि महिना रो सुकाल।
दोय पौहर बादल हुवै तो आठ महिना रो सुकाल।
च्यार पौहर बादल हुव गाज बीज हुवै मेह बरसै तो तो चौइस महीनां रो सुकाल।

(पोथो ग्रंथ ज्ञान-पृ. 568)

जाम्भाणी साहित्य में झरने के जल को अमृत व प्राकृतिक स्रोत झरना रूपे का महल और उस पर स्वर्ण का छाजा बताया गया है-

रूप का महल सोने का छाजा, अम्रत बूंद झूर अम्बर धारा, तां विच नीझर झरणां। (पोथो ग्रंथ ज्ञान- पृ. 398)

नदी जल की पवित्रता कवि कान्होजी समझाते है कि जहां पर नदी का जल विमल (स्वच्छ, मलरहित) होगा, वहां के धरातल पर वर्षा अधिक होगी और जहां पर नदी जल मलीन होगा वहां पर सूर्य के रहते हुए भी अंधेरा नजर आयेगा-

जठे नदी जल विमल, तठै थल मेर उलटै।
तिमर घोर अंधार , जहाँ रवि किरण प्रगटै।

(पोथो ग्रंथ ज्ञान पृ. 394)

कवि कील्ह जी 'बारामासौ दूहा' में श्रावण भादवा एवं आषाढ़ मास को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते है क्योंकि इन तीन महीनों में इन्द्र मेह बरसाता है-

सावण मास सुहावणौ-

घण गरजै दांवणि खिंवै, चात्रग मंने उदास।
सर छलिया सिलता बहै, मनां न पूरी आस।
आसाढ़े आसा घणी, वणी झिंगारे मोर।

कील्ह कहै हरि आवियो, सुणी जलहर की घोर॥

(पोथो ग्रंथ ज्ञान, पृ. 39)

'जल ऊंडा जल ऊजला' सूक्ति भी प्रकृति तथा जल के मध्य सम्बन्ध को प्रगाढ़ बनाती है और साथ ही जल के अखण्ड प्रवाह, दया, करुणा, उदारता, परोपकार और शीतलता के गुण विद्यमान होने का संकेत भी करती है। परोपकार के लिए गांवों में पानी के संचयार्थ कुआं या तालाब के सन्दर्भ में मेहो गोदारा कृत रामायण में-

राम खंणावै रांमसर, लछमण बांधै पाल्य।
सिर सोनै रो बेहड़ो, सीतळदे पंण्यहारि॥

(मेहोजीकृत रामायण)

राम द्वारा तालाब खुदवाना, लक्ष्मण द्वारा उनकी पाळ बंधवाना तथा सीता द्वारा सिर पर दो घड़े रखकर पानी लाना, जल की उपयोगिता एवं महिमा का मण्डन है। मनुष्य कितना भी दु:खी क्यों न हो, शीतल जल से मुंह धोते ही वह शान्त हो जाता है- सीता हरण के बाद आश्रम में सीता को न पाकर-

राम रोवै लिछमण धीरवै, गहला राम न रोय।
सीत गई तो जांण दे, ले लोटी मुख धोय॥

(मेहोजी कृत रामायण)

विलाप करते हुए राम को लक्ष्मण लोटे से जल पिलाकर धैर्य धारण करवाते हैं। यह ही नहीं जल में रूक्मिणी के विलाप को सुनकर श्रीकृष्ण लोकरक्षक रूप में आकर उसकी रक्षा भी करते है-

संग सख्या ले रूकमणी, सरवर न्हांवां जाय।
सात समुद्र की रतन तलाई, रूकमणी न्हावां सिधारी।
और सहेल्या बाहिर न्हावै, रूकमण बीच पधारी।
जद रूकमण जल डूबण लागी, याद किया बनवारी॥

(पोथो ग्रंथ ज्ञान, पृ. 502)

जाम्भाणी परम्परा में सरोवर को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। सरोवर को सबसे बड़ा एवं सर्वाधिक पुण्य दाता तीर्थ माना गया है-

रोहनी कुंड सेत गंगा, कपिल देव ज्यूं और सहोदर दीठ।
कपिल देव गंगा सम संगम, लछमण कुवर खसीठ।
कासी वस बुध तन तजहि, चित्रकूट चित सोय।
मथुरा व्रिदावन करै, और अजुध्या जोय।
पुहकर तीर्थ अंवतिका, गया पिंड है जाय।
सो फल पावै तुरन्त ही, जम्भ सरोवर न्हाय॥

(पोथो ग्रंथ ज्ञान, पृ. 428)

मनुष्य का मन जलीय तत्त्वों का एक समुद्र है। मानव की वाणी में सरसता और जीभ में आद्रता जल के कारण ही है। जल के कारण ही आंखो में तेज और दर्शन शक्ति है। अन्तरिक्ष में जल व्याप्त है। धरातल पर समुद्र जल का आधार है। सिकता रेत जल का ही उच्छिष्ट अंग है। इसलिए तो पाहल मंत्र में पर्यावरणीय पंच तत्त्वों का परस्पर संगम बताया गया है।

आकाश वायु तेज जल धरणी तांमां सकल सृष्टि की करणी

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं को नदियों में भागीरथी गंगा तथा जलाशयों में समुद्र बताकर (स्त्रोतसास्यि जान्ह्वी सरसामस्मि सागर) जल की महत्ता को ही स्वीकृति प्रदान की है। मानव को सब सुखों को देने वाला, प्राणों को धारण करने वाला, माता के समान पालन करने वाला जल ही है, इसका मूल्य समझकर ही पर्यावरण व जल के मध्य सन्तुलन कायम किया जा सकता है। 500 ईस्वी पूर्व पिण्डरोज नामक ग्रीक वैज्ञानिक ने जल को सभी वस्तुओं में सर्वोत्तम, जो आज भी सर्वोत्तम ही है।

पांणी राखै आपन पास, पिया विना न जाय पियास।
ओखद है घर मांही घसाही, पीया विना रोग न जाही॥

(पोथो ग्रंथ ज्ञान, पृ. 370)

सन्दर्भ ग्रंथ:

1. ऋग्वेद
2. अथर्ववेद
3. शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ
4. आयुर्वेद
5. वील्होजी की वाणी
6. पोथो ग्रंथ ज्ञान
7. जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य
8. मेहोजी गोदारा कृत रामायण
9. श्रीमद्भगवद्गीता
10. राजस्थान पत्रिका-दैनिक समाचार पत्र
11. सबदवाणी

-रामस्वरूप
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
मो.: 09782005752

जाम्भाणी संस्कार शिविर सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि युवा वर्ग को जांभाणी संस्कारों, गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं, कैरियर सम्बन्धी मार्गदर्शन, व्यक्तित्व विकास व अन्य जीवनोपयोगी शिक्षाओं से परिचित करवाने के लिए जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा जून के ग्रीष्मावकाश में संस्कार शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जिनका विवरण इस प्रकार है-

1. हिसार: अकादमी एवं बिश्नोई सभा, हिसार के संयुक्त तत्वावधान में 2 से 6 जून तक पांच दिवसीय आवासीय संस्कार शिविर का आयोजन बिश्नोई मन्दिर, हिसार में किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के इच्छुक लड़के या उनके अभिभावक शिविर के प्रभारी श्री पृथ्वीसिंह बैनीवाल (मो. 9467694029) या सभा कार्यालय में 01662-225804 पर सम्पर्क करें।

2. लालासर साथरी: अकादमी एवं गुरु जम्भेश्वर भगवान निर्वाण स्थल लालासर साथरी के संयुक्त तत्वावधान में 9 से 13 जून तक पांच दिवसीय आवासीय संस्कार शिविर का आयोजन लालासर साथरी में किया जा रहा है। भाग लेने के इच्छुक लड़के या उनके अभिभावक शिविर के प्रभारी श्री मोहनलाल खिलेरी (मो. 9799835529) या अकादमी कार्यालय सचिव हरिनारायण भादू (मो. 7568493437) से सम्पर्क करें।

3. सिरसा: अकादमी एवं बिश्नोई सभा, सिरसा के संयुक्त तत्वावधान में 15 से 19 जून तक पांच दिवसीय आवासीय संस्कार शिविर का आयोजन श्री बिश्नोई मन्दिर, सिरसा में किया जा रहा है। भाग लेने की इच्छुक लड़कियां या उनके अभिभावक शिविर के प्रभारी डॉ. मनीराम सहारण (मो. 9896057532) व सभा सचिव श्री ओ.पी. बिश्नोई (मो. 9812096665) से सम्पर्क करें।

नियमावली

1. ये पूर्णत: आवासीय शिविर होंगे। जिसमें प्रतिभागी को शिविर अवधि में आयोजन स्थल पर ही रहना होगा अर्थात् घर आने-जाने की अनुमति नहीं होगी।
2. आवेदक की आयु 1 जून को 13 से 17 वर्ष के बीच होनी चाहिए। आवेदन-पत्र के साथ आयु प्रमाणित करने वाला कोई प्रमाण पत्र संलग्न करना अनिवार्य है।
3. शिविर में केवल 100 प्रतिभागी ही भाग ले सकेंगे। 100 से अधिक आवेदन आने पर प्रतिभागियों का चयन आयोजन समिति द्वारा योग्यता के आधार पर किया जायेगा।
4. शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रार्थी का आवेदन-पत्र 20 मई, 2018 तक जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर के कार्यालय या शिविर स्थल पर पहुँच जाना चाहिये। चयनित प्रार्थियों को 25 मई, 2018 तक दूरभाष द्वारा सूचित किया जायेगा। प्रयास यह किया जाए कि आवेदक जिस शिविर में भाग लेना चाहता है, आवेदन पत्र भी वहीं जमा करवाए। आवेदन पत्र अकादमी की ईमेल- jsakademi@gmail.com पर भी भेजा जा सकता है।
5. शिविर में भाषण, पेंटिंग, गायन, प्रश्नोत्तरी, योग आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जायेगी। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे इससे सम्बन्धित यदि कोई आवश्यक सामग्री हो तो अपने साथ लेकर आएं।
6. आवास, भोजन व पठन सामग्री आदि की पूर्ण व्यवस्था आयोजकों की ओर से होगी तथा अन्य आवश्यक सामान (कपड़े, तौलिया, साबुन, कंघा आदि) प्रार्थी अपने साथ लेकर आएं। बिछाने का वस्त्र उपलब्ध करवाया जायेगा केवल ओढ़ने का वस्त्र साथ लेकर आएं।
8. प्रतिभागी छात्र शिविर में मोबाइल या नकद राशि नहीं रख सकेगा। उसे नकद राशि कार्यालय में जमा करवानी होगी। जो उसे आवश्यकतानुसार दी जायेगी तथा शिविर समाप्ति पर उसे सम्पूर्ण राशि वापिस लौटाई जायेगी।
9. छात्र को शिविर में छोड़कर जाना व शिविर समाप्ति पर लेकर जाना अभिभावक की जिम्मेवारी होगी। बिना अभिभावक के छात्र को न तो प्रवेश दिया जायेगा और न ही घर भेजा जायेगा।
10. बिना अपरिहार्य कारण के शिविर अवधि में अभिभावक को छात्र से मिलने की अनुमति नहीं होगी तथा केवल आवेदन-पत्र में दर्शाये गये अभिभावक ही छात्र से मिल सकेंगे।
11. शिविर के अन्तिम दिन निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर परीक्षा भी होगी तथा प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी दिये जायेंगे।
12. शिविर से सम्बन्धित आवेदन पत्र, नियमावली, पाठ्यक्रम आदि अकादमी की वेबसाइट www.jambhani.com से डाउनलोड किया जा सकता है तथा अकादमी कार्यालय व शिविर स्थलों से भी प्राप्त किया जा सकता है।
13. हिसार एवं लालासर शिविर में केवल लड़के व सिरसा शिविर में केवल लड़कियां ही भाग ले सकती हैं।

-स्वामी सच्चिदानन्द आचार्य
संयोजक, संस्कार शिविर आयोजन समिति,
जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर
मो.: 9950003118

रिश्ते संवेदना के

रिश्ते भी अजीब चीज है, कहते हैं कि रिश्ते दिल से निभाये जाते है। मेरा यह मानना है कि आपस में भावनात्मक जुड़ाव ही रिश्ते को कायम रखते है यानि दो प्राणियों के बीच की भावनात्मक अभिव्यक्ति रिश्ते का रूप है। वैज्ञानिक शोध भी यह मानते है कि किसी भी प्राणी को मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिये यह भावाभिव्यक्ति अति आवश्यक है।

बहुत सी बार यह रिश्ते किन्हीं भी प्राणियों के मध्य बन जाते है। जैसे मेरे द्वारा लगातार एक छोटे बछड़े को काफी समय तक रोटी व गुड़ देना, किसी दिन उसके नहीं आने पर उसकी अनुपस्थिति को महसूस करना तथा उसके द्वारा भी आवाज देकर, दरवाजा बजाकर तथा सामने देखने पर हाथ फिरवाने की व्यग्रता आदि अभिव्यक्तियां करीब दो वर्ष तक चलती रही, समय के साथ-साथ मेरा उससे और उसका मुझसे जुड़ाव बढ़ता रहा।

सर्दियों के दिन थे इसलिये उसने सुबह जल्दी आना बन्द कर दिया था और मैं अपनी नौकरी पर चली जाती, शाम को ही एक दूसरे से बतिया पाते थे। एक दिन अचानक सर्दी में सुबह वह घर के बाहर खड़ा दिखा, मुझे देरी तो हो रही थी लेकिन मैं रोटियां लेकर बाहर भागी उसे खिलाने को। बाहर जाकर देखा तो वह कांप रहा था, मै सोचने लगी इतनी तो ठंड भी नही है, क्या हुआ। इतने में मेरी नजर उसके पेट पर पड़ी, मैंने पेट को छूकर देखा तो आफरा लगा तथा साथ ही वह निश्चिंत हो गया कि मुझे उसकी तकलीफ पता चल चुकी है मैंने तुरन्त परिचित पशु चिकित्सक को फोन कर दवाई पूछी तथा उनके बताये अनुसार निर्देशानुसार उसको केरोसीन सुंघाने लगी, लेकिन दुर्भाग्य, वह गिर पडा उसके केरोसिन का कोई असर नहीं हुआ था तथा दवाई की दुकानें भी उस समय बन्द थी। तब उसे तेल और हींग पिलाने की कोशिश की लेकिन वह पी नहीं पाया और उसकी सांसे उसका साथ छोड़ गई।

मैं आज तक अपराध बोध महसूस करती हूँ। हालांकि मेरे पास आधे घण्टे से भी कम समय था उसकी मदद करने के लिये। लेकिन मैं सोचती हूँ कि वह 'बेचारा' अपने अन्तिम समय में भी मुझसे मदद की आस लिये आया था और मुझे उसकी स्थिति की गम्भीरता का आभास नहीं हो पाया। काश! मैं उसकी मदद कर उसके प्राणों को बचा पाती।

ऐसा ही मेरा एक और रिश्ता एक छोटी प्यारी-सी बछड़ी के साथ जुड़ा है। वह मेरे वापस घर आने पर बाहर से गाडी का होर्न बजाकर बच्चों को दरवाजा खोलने के लिये बुलाने पर, बच्चो से पहले होर्न की आवाज सुनते ही दौड़ते हुए आकर, दरवाजे के आगे खड़ी हो जाती है। उसका इस प्रकार से मेरी गाड़ी और उसके होर्न की आवाज को पहचानना मुझे रोमांचित कर देता है।

दरअसल, वह जब छोटी थी तभी से मैं उसको रोटी व गुड़ देने के साथ-साथ उसके हाथ फिराकर उससे बात करती रहती थी। मेरा यह मानना है कि कुछ खिलाने से भी ज्यादा जीवों को भी एक स्वस्थ भावनात्मक लगाव की जरूरत होती है। तभी तो जब वह बछड़ी एक बार मुझे तीन-चार दिन से नहीं दिखी तो मै उसके घर पहुंच गई, वहां जाकर देखा तो वह बीमार कमजोर थी और दस्त लगने से उसके पूरे शरीर से बदबू आ रही थी। मैंने उसको गुड़-रोटी खिलाने की कोशिश की लेकिन उसने उसे सूंघा तक नहीं। मैंने उसके थोडी देर हाथ फेरा और अंधेरा हो जाने के कारण घर आ गई। दूसरे दिन शाम को जब मैं उसको देखने गई तो उसके मालिक ने मुझसे पूछा कि मैंने पिछले दिन उसे क्या खिलाया था। मैं भी डर गई थी कि पता नही क्या हो गया? मैंने कहा उसने तो कुछ भी नहीं खाया। तब उन्होंने बताया कि उससे तो चला भी नहीं जा रहा था इसलिये उन्होंने उसे उठाकर साफ जगह बिठाया था लेकिन मेरे द्वारा उसके हाथ फेर कर वापिस घर की तरफ जाने पर वह जैसे-तैसे उठी और दो चार कदम तक मेरे पीछे-पीछे चलने की कोशिश करने लगी। हालांकि मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा था और अंधेरा हो जाने से मैं भी घर जाने की जल्दी में थी इसलिये मुझे पता नही चला सका, लेकिन मेरे प्रति उसके भावनात्मक लगाव को देखकर मैं अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकी।

कई बार मुझे लगता है कि मेरा दायरा बहुत छोटा है। काश! मुझे थोडा ज्यादा समय मिले और मैं इस दायरे को व्यापक बना सकूँ। जब भी मैं किसी दुर्बल, बीमार गाय या दूसरे प्राणी को देखती हूं तो मुझे अपने सामर्थ्यवान मानव होने पर शर्मिन्दगी महसूस होती है। कभी लगता है कि काश सब लोगों के पास भी अन्य जीवों से भावनात्मक रिश्ता जोड़ने की सोच तथा समय हो तो हम ईश्वर प्रदत्त प्रकृति, इसके सौन्दर्य, जीवों तथा उनके साथ-साथ स्वयं के स्वस्थ रहने का सूत्र भी पा सकते हैं।

-डॉ. हेमू चौधरी (व्याख्याता-प्राणी शास्त्र)
राजकीय महाविद्यालय, औसियां (जोधपुर)
E-mail: hchemuchaudhary06@gmail.com
मो.: 9414104965

काला हिरण मामले में सलमान को 5 साल की सजा

जोधपुर (7 अप्रैल, 2018): कांकाणी गांव में 20 साल पहले दो काले हिरणों की हत्या के मामले में अभिनेता सलमान खान के दोषी करार दिए जाने के मामले में गवाहों

- **बिश्नोई गवाह नहीं डिगे तब मिल पाई सलमान को 5 साल सजा**
- **जज ने कहा- सलमान को लोग फॉलो करते हैं, फिर भी उसने दो निर्दोष काले हिरण मार डाले, यह ठीक नहीं है...**

की अहम भूमिका रही। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट देव कुमार खत्री ने उन्हें 5 साल जेल और 10 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है। हालांकि, उनके सह आरोपी सैफ अली खान, तब्बू, सोनाली बेंद्रे व नीलम को संदेह का लाभ देकर बरी कर दिया। सीजेएम के समक्ष सजा पर बहस के दौरान बचाव पक्ष ने सलमान को कम सजा देने का आग्रह करते हुए कहा कि उन्हें जेल भेजने से फिल्म जगत से जुड़े कई घरों की रोजी-रोटी प्रभावित होगी। कोर्ट ने यह दलील खारिज करते हुए कहा कि दोषी को आम लोग फॉलो करते हैं। फिर भी उसने दो निर्दोष काले हिरणों का शिकार किया, यह ठीक नहीं है।

20 साल से आज तक की कहानी...

3 बार में

15 दिन जेल

3 दिन कस्टडी

15 से 17 अक्टूबर 1998 : 12 अक्टूबर को गिरफ्तारी के बाद 3 दिन वन विभाग की कस्टडी में रहे। फिर उन्हें जेल भेजा गया।

10 से 15 अप्रैल 2006 : घोड़ा फार्म हाउस शिकार प्रकरण में लोअर कोर्ट द्वारा 5 साल की सजा सुनाने पर जेल गए।

26 से 31 अगस्त 2007 : सेशन कोर्ट ने लोअर कोर्ट की सजा की पुष्टि की तो फिर जेल जाना पड़ा। जमानत पर छूटे।

सजा से पहले : सुबह 11 बजे सलमान बॉडी गार्ड शेरा के साथ पहुंचे। काला शर्ट व चश्मा पहने थे। मन आशंकित, लेकिन चेहरे पर आत्मविश्वास लाने का प्रयास करते दिखे।

सजा के बाद : दोपहर 2:30 पुलिस के घेरे में कोर्ट रूम से बाहर आए। चश्मा उतर चुका था। चेहरे पर भारी तनाव और आंखें भरी हुई थी। रूआंसु भाव कैमरों से बचाने के लिए गर्दन झुका ली।

जेल पहुंचने पर : दोपहर 2:58 पर आरएसी ने दोनों हाथ ऊपर उठवा कर तलाशी ली। बाहर निकले तो शर्ट बाहर निकला हुआ था। चेहरे पर गुस्से के भाव दिख रहे थे।

20 साल बाद फैसला : 3 घंटे की फिल्मों के सुपरस्टार सलमान खान की कोर्ट की कार्रवाई भी 3 घंटे ही चली। लेकिन यहां से सलमान खान दबंग नहीं बल्कि हिरण शिकार के दोषी बनकर निकले। पूरी कोर्ट कार्रवाई के दौरान तो सलमान ने भरसक प्रयास किया कि सामान्य दिखें, लेकिन सजा सुनते ही आंखें भी छलछला आईं। उधर सजा की सूचना कोर्ट परिसर में मिलते ही पूरे बिश्नोई समाज के लोगों ने पटाखे छोड़कर खुशियां मनाईं।

3 घंटे की फिल्मों के स्टार की कोर्ट कार्रवाई भी 3 घंटे चली, दबंग नहीं दोषी बने सलमान।

बिश्नोई समाज ने पटाखे जलाए, गुड़ बांटा

सलमान को दोषी करार देते ही बिश्नोई समाज के लोगों ने नारेबाजी की और जमकर पटाखे फोड़े और गुड़ बांटा। समाज के लोगों ने कहा कि बीस वर्ष की उनकी मेहनत बेकार नहीं गई। कांकांणी के जंभेश्वर मंदिर में बिश्नोई समाज ने विशेष पूजा-अर्चना की। इस केस में पूनमचन्द बूड़िया, छोगा राम बूड़िया और चोखा राम पूनिया ने गवाह के रूप में अपने धर्म का पालन किया। जिसके कारण हिरण को न्याय मिला।

डीएनए, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और गवाही बनी अहम सबूत

सलमान पर 200 पेज का फैसला आया है। इसमें चश्मदीद गवाह, डीएनए रिपोर्ट, पोस्टमार्टम बोर्ड के डॉक्टर, वन्यजीव के अधिकारी, अनुसंधान अधिकारी की ओर से दिए सबूतों के जरिए कड़ी से कड़ी जोड़ी गई है। हिरण की मौत गोली लगने से हुई थी। फॉरेंसिक सबूत भी सलमान के खिलाफ रहे।

-पूनमचन्द कस्वां
जोधपुर (राज.)

अमल, तम्बाकू, भांग, मद्य, माँस से दूर ही भागे

विश्व की अनेक नकारात्मक एवं विध्वंसकारी कुप्रवृत्तियों की श्रृंखला में मादक द्रव्यों का सेवन एक अभिशाप है जो कि भारतीय समाज में भी अपने पैर पसार चुका है। यह पूर्णतया पाश्चात्य संस्कृति का भारतीय संस्कृति में संक्रमण है, जिसका दुष्परिणाम वर्तमान युवा पीढ़ी को चरस, गांजा, अफीम, हैरोइन आदि के सेवन के रूप में भुगतना पड़ रहा है। यह विदेशी शक्तियों द्वारा भारतीय युवा शक्ति को खोखला करने की एक साजिश है। यद्यपि प्राचीन काल में भी लोग इन पदार्थों का सेवन किया करते थे किन्तु ये केवल राजा-रजवाड़ों तक ही सीमित था किन्तु वर्तमान में तम्बाकू, शराब, चरस आदि का अंधाधुंध सेवन युवा पीढ़ी की ऊर्जा शक्ति एवं सृजन शक्ति को खोखला कर रहा है।

"खुद बिगड़े हो तुम जो अब तो, बच्चों को क्या सिखलाओगे,
खुद जो करने लगे नशा हो, उनको कैसे बचाओगे?"

मादक पदार्थों के सेवन से जहाँ एक ओर आर्थिक व्यवस्था का ढाँचा चरमरा रहा है, दूसरी ओर समाजिक एवं पारिवारिक व्यवस्था भी चौपट हो रही है। आज प्राय: हर तीसरे घर में कोई न कोई व्यक्ति किसी न किसी नशे से ग्रस्त पाया जाता है। चाहे वह शराब का नशा हो अथवा गाँजे का। जिसका परिणाम यह होता है कि कहीं माता-पिता दु:खी हैं, तो कहीं हत्या या आत्महत्या की नौबत उभर कर आ जाती है। परिणामत: इन मादक पदार्थों के सेवन से सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया है। कहने को तो युवा पीढ़ी जो स्वयं को बौद्धिक एवं जागरूक मानती है, अपनी चेतना एवं स्मरण शक्ति को बढ़ाने, थकान मिटाने आदि के लिए उन पदार्थों का सेवन करती हैं, जो प्रारम्भ में अति उत्साह, दोस्तों के उकसाने, थोड़ा-सा चख लेने, विज्ञापनों, फिल्मों, पत्र-पत्रिकाओं के उत्तेजक दृश्यों को देखने से प्रेरित होती है, जिसका परिणाम आखिर में केवल और केवल बर्बादी ही होता है। यह मादक पदार्थ प्रारम्भ में नि:शुल्क या अल्पशुल्क में आदम बिगाड़ने के लिए सहज उपलब्ध करवाये जाते हैं, किन्तु जब धीरे-धीरे यह व्यक्ति को अभ्यस्त कर डालते हैं, तो फिर वह इन महंगे मादक पदार्थों को प्राप्त करने के लिए चोरी, डकैती, हत्या एवं कुछ भी कर सकता है।

मनोविश्लेषकों ने विभिन्नि शोधों से यह निष्कर्ष निकाला है कि मादक पदार्थों का सेवन जहाँ एक ओर मनुष्य को भावनात्मक दृष्टि से शून्य कर डालते हैं, वहीं दूसरी ओर धीर-धीरे उसे अयोग्य, अकुशल और कमजोर समझने की जो प्रवृत्ति उन्हें इस नशे की ओर धकेलती है, उसे और भी गहरा करते चले जाते हैं। युवा वर्ग मूड फ्रैश करने अथवा सुखानुभूति की कामना करने के लिए इन नशों का गुलाम बन जाता है।

"ये जो बिगड़ी दिशा दशा है आज
नशे का सारा ये है काज
देख लो कैसा कलयुग आया
माया में ही सब भ्रमित हैं
ऐसी नशे की लत ये देखा
विष में दिखता अब अमृत है।"

"युवा शक्ति ही प्रत्येक देश की धड़कन होती है जो कि उस राष्ट्र के विकास एवं संवर्द्धन को निर्धारित करती है।" किन्तु आज का युवा तो इस देश की धड़कन को ही बंद करने में लगा हुआ है। इसका दुष्परिणाम आने वाले वर्षों में यह देखने को मिलेगा कि भारत के विकास का मेरूदण्ड यह युवा पीढ़ी शनै: शनै नशे में इतनी डूब जाएगी कि भारत वर्ष केवल बूढ़ों का देश बनकर रह जाएगा। यदि समय रहते इस समस्या पर नियन्त्रण नहीं किया गया तो भावी पीढ़ियाँ हमें इस गलती के लिए कभी क्षमा नहीं करेंगी।

मेरे वक्तव्य से मादक पदार्थों के सेवन से बचाने हेतु निम्न प्रयोग प्रभावशाली हो सकते हैं-

1. सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थानों द्वारा मादक पदार्थों के उपयोग से होने वाले दुष्परिणाम से अवगत करवाया जाये।
2. विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों में वाद- विवाद, भाषण प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से मादक पदार्थों के सेवन के दुरुपयोग से होने वाले दुष्परिणामों का चित्रण किया जाए।
3. मादक पदार्थों को बेचने वाले एवं उनका सेवन करने वाले लोगों को दंडित करने हेतु कठोर कानूनों का निर्माण किया जाए।

4. जिस परिवार में मादक पदार्थों का सेवनकर्त्ता युवा वर्ग पाया जाये उस पर मानसिक दबाव इस प्रकार से बनाया जाए कि शनैः शनैः वह स्वयं ही इस आदत से मुक्ति पा लें।
5. योगाभ्यास, चारित्रिक अभ्यास, महापुरुषों की जीवनियाँ आदि के माध्यम से युवा पीढ़ी को सुशिक्षित किया जाए।
6. किसी भी परिवार में युवा वर्ग को एकांत में नहीं छोड़ा जाये तथा वह कहाँ जाता है, क्या करता है आदि प्रत्येक गतिविधियों का सूक्ष्मता से अवलोकन किया जाये।
7. किसी भी अभिभावक द्वारा अपनी संतान को अपव्यय हेतु धन उपलब्ध नहीं करवाया जाये, अन्यथा अधिक धन की मादक पदार्थों के सेवन का प्रमुख कारण बनता है।
8. किसी भी परिस्थिति में कठोर व्यवहार, क्रोध एवं मानसिक प्रताड़ना मादक पदार्थों से ग्रस्त युवा वर्ग को इस बुरी आदत को छोड़ने हेतु मजबूर नहीं कर सकती, अतः प्रेम एवं मानवीय व्यवहार द्वारा ही उसे समझाया जाये।

उपर्युक्त उपचारों से युवा पीढ़ी को न केवल मादक पदार्थों के सेवन से बचाया जा सकता है अपितु उसे प्रेरित करके पुनः भारत को गौरवान्वित होने के पद से सुशोभित भी किया जा सकता है, जैसा कि आज की युवा पीढ़ी के परिष्कृत नौजवान अभी भी अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में चिकित्सा, अंतरिक्ष अनुसंधान, कम्प्यूटर आदि विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहा है। ऐसा ही उन युवाओं के साथ भी हो सकता है जो उचित मार्गदर्शन के अभाव में भटक गये हैं किन्तु अब सही राह में आने हेतु तत्पर हैं।

-शिशपाल लोहमरोड़
मु.पो.-रोटू, तह-जायल
जिला नागौर (राज.)
मो. 7375027001

अनमोल प्राणी

1. भौतिकवाद युग से ऊपर उठकर हम एक नई डगर अपनाएंगे।
इंसानियत को आगे बढ़ाकर हम एक नई नीति अपनाएंगे।
आओ हम मिलकर अनमोल प्राणियों को बचाएंगे।

2. घर-घर को ही नहीं, ऑफीस-कार्यालयों को नहीं,
हम अपने मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिरिजाघरों
को भी प्राणियों का रेन-बसेरा बनाएंगे,
आओ हम मिलकर अनमोल प्राणियों को बचाएंगे।

3. खेतीहर किसान मित्रों को हम नई सौगात दिलाएंगे,
इन बेजुबानों को हम एक नई उड़ान दिलाएंगे,
सदियों से चली आ रही इस पुकार को हम आगे बढ़ाएंगे,
आओ हम मिलकर अनमोल प्राणियों को बचाएंगे।

4. कच्ची मिट्टी के बर्तनों में हम शीतल जल भरेंगे,
इस संदेश को हम हर जन-जन तक पहुंचाएंगे,
आओ हम मिलकर अनमोल, प्राणियों को बचाएंगे।

-वीरेन्द्र सिंह खिचड़
WAPCOS Enginner
सादलपुर, हिसार (हरियाणा)

श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल महिमा शतक

कोटि कोटि वन्दन तुम्हें,
श्री सदगुरु देवेश्वर जंभ।
करूं सेवकदल सेवा बखान,
सेवा एक अनमोल स्तम्भ॥
सन् 1947 से सेवा चल रही,
हमारा करे इस पर विचार।
कैसे सुविधा मिले यात्री को,
मिटे सब सब क्लेश विकार॥
मेले प्रतीक अपनी संस्कृति के,
इसमें सुधरे आचार विचार।
परम्परा विष्णु जप हमारी,
जो हरे सब पाप-विकार॥

॥चौपाई॥

जम्भेश्वर सेवकदल रूप है न्यारा।
करते सेवा भाव है प्यारा॥1॥
बसंत चाहे हो मेला मुकाम।
नित इनका रचनात्मक काम॥2॥
पोलिथीन का त्याग करावै।
संस्कार पुराने याद करावै॥3॥
1947 में जम्भेश्वर सेवकदल बनाया।
लाहोर पंजीकरण करवाया॥4॥
मुक्तिधाम मुकाम प्यारा धाम।
संस्थापक गोदारा लाधुराम॥5॥
सत्य अहिंसा के करते काम।
प्रेरक जिसमें धारणिया सही राम॥6॥
बने माँझू बीरबल संगी साथी।
प्रेम सबसे किड़ी हो या हाथी॥7॥
साथ में आए गोपी धतरवाल।
श्रीकृष्ण सहारण करै सम्भाल॥8॥
उणतीस नियम पै करते काम।
श्योनारायण पुनिया आये धाम॥9॥
और महानुभावों ने पाया सम्मान।
सेवकदल में दिया योगदान॥10॥
था धोती कुरता सादा वेश।
हंसते सेवा थी करी हमेश॥11॥
इन लोगों प्रथम पंक्ति में दी आवाज।
प्यारी भाषा सुधारे पंथ के साज॥12॥
हेतराम तरड़ जाणै सेवा सार।
ली साहरण श्रीकृष्ण मन में धार॥13॥
वृक्षों को पानी ली सेवा धार।
सेवा से गोपी धतरवाल उतरे पार॥14॥
साधुवाली से चले और लंघे पार।
सेवा नाम शंकरलाल पंवार॥15॥
ये थे दूसरी पंक्ति के सेवक लोग।
सताया न कभी इनको रोग॥16॥
सफेद वस्त्रों में बनाई टीम।
थे सेवा कार्य इनके अधीन॥17॥
सेवा में संलग्न मीठे बोल।
इनका धर्म में मोल न तोल॥18॥
चीर के देखें यदि दिल के द्वार।
है सर्वत्र स्वच्छता सेवा भाव॥19॥
कण-कण बिश्नोई सृष्टि का।
अवलोकन स्वच्छ दृष्टि का॥20॥
रामलाल डेलू का झूमे मन।
पंवार बृजलाल का नाचौ तन ॥21॥
जागे सेवक साथियों के संग।
हर साथी रही भरी उमंग॥22॥
सेवाभाव के नवप्राण फूंकते।
मिलते हरदम प्यार से बोलते॥23॥
सेवक बन आये खेराज गोदारा।
सेवा में लगे हुई पौ बारा॥24॥
रामनारायण सिगड़ आए चाल।
सेवकों में सेवा हृदय विशाल॥25॥
मुश्किल समय में सेवा करते।
भोजन व्यवस्था पानी भरते॥26॥
भोजन सामग्री सेवक से लाते।
यात्री सेवा जम्भगुरु धुन गाते॥27॥
कठिन समय दल पार लंघाया।
सेवा भाव का कोई पार न पाया॥28॥
1975-76 में सेवक दल विस्तार हुआ।
तीसरी पंक्ति में शंकर पंवार हुआ॥29॥
जम्भेश्वर सेवक दल में सुधार हुआ।
बृजलाल खीचड़ सेवक प्रधान हुए॥30॥
सतजी धारणिया लीनही धार।
रामरख भादु हेतराम तरड़ पाई पार॥31॥
बदरी भादु, सुल्तान धारणिया।
गुरु जाम्भोजी खुद पार उतारणिया॥32॥
शिवकुमार कड़वासरा की सेवा न्यारी।
गोरधन साहरण की बोली प्यारी॥33॥
लगे सेवा में खिलेरी बनवारी।
बने सहाई गुरु जम्भ अवतारी॥34॥
सेवक बड़े गोदारा राधेश्याम।
उत्तम प्रबन्ध सबको आराम॥35॥
सन् 1986 रायसिंहनगर सत्र में।
5 से 7 जुलाई के घोषणा पत्र में॥36॥
प्रवेश नये जम्भेश्वर सेवकों का।
पंजीकरण 500 नव सेवकों का॥37॥
प्रबन्ध मेले में विभिन्न संभागों का।
व्यवस्थ प्रबन्ध सभी विभागों का॥38॥
सेवकों के मन में तब आया था।
दर्द माँ बहन बटियों का समाया था॥39॥
बहू, बहन, बेटियाँ मेले न देख पाती थी।
हर वक्त डेरे में भोजन बनाती थी॥40॥
ठहरने का नहीं प्रबन्ध था।
नहीं पानी से कोई सम्बन्ध था॥41॥
यात्री झौंपड़ो में किराया देते थे।
मेले में विवश वहाँ रहते थे॥42॥
पीने के पानी का लगता मोल था।
नहीं कष्टों का कोई तोल था॥43॥
मुकाम लंगर का विचार किया।
1992 में सेवकों ने धार लिया॥44॥
रामसिंह कसवाँ की अगुवाई में।
श्रीगंगानगर सेवकों की रहनुमाई में॥45॥
तब सेवकदल स्थिति कमजोर थी।
फिर भी सेवकों की सोच और थी॥46॥
सर्वप्रथम व्यवस्था को संवारा था।
मिल कर चालू किया भण्डारा था॥47॥

चालू भोजन कराना कर दिया।
संकट यात्रियों का हर लिया ॥48॥
जम्भेश्वर सेवकदल प्रमार्थ है।
सेवा, सेवा है न कोई स्वार्थ है ॥49॥
सेवक करते बाढ़ प्रबन्ध है।
इनका हर समस्या से संबन्ध है ॥50॥
प्राकृतिक आपदा प्रबन्धन में।
बंधे सभी सबदवाणी बंधन में ॥51॥
इनको हर सेवा का आमन्त्रण है।
करते हर मेले का नियन्त्रण है ॥52॥
पीपासर सम्भराथल का काम है।
प्रबंध धर्मशालाओं का अविराम है ॥53॥
सेवा गऊओं के आमन्त्रण में।
सहयोग सदा दूध वितरण में ॥54॥
करते निरन्तर आवास व्यवस्था।
सेवकों की है शानदार आस्था ॥55॥
लगे हैं जल-विद्युत प्रबन्ध में।
न शिकायत किसी सम्बन्ध में ॥56॥
काम सेवक दल के वर्तमान में।
29 सदस्य समिति है काम में ॥57॥
वित्त समिति वित्त व्यवस्था में।
लगी कमेटी लंगर व्यवस्था में ॥58॥
करते प्रबन्ध गऊशाला का।
है रख रखाव धर्मशाला का ॥59॥
भोतिक संस्थापन समिति है।
सेवक भवन निर्माण समिति है ॥60॥
समिति प्रतिभा सम्मान की।
प्रतीक समाज के शान की ॥61॥
भौतिक संस्थापन समिति है।
प्रबन्ध क्रय-विक्रय समिति है ॥62॥
आवास विद्युत व्यवस्था करै।
एक समिति गऊ रक्षण करै ॥63॥
कार्य संचालन समिति प्यारी है।
अंकेक्षण समिति न्यारी है ॥64॥
अनुशासन आचरण दल में है।
काम करते एकता दिल में है ॥65॥
अ.भा. जम्भेश्वर सेवक दल है।
आज करै काम न जाणै कल है ॥66॥
जम्भेश्वर सेवक दल के लोग।
करै बिश्नोई महासभा का सहयोग ॥67॥
दोनों रचनात्मक काम करते हैं।
दोनों कदम मिला कर चलते हैं ॥68॥
सन् 2016 कार्यकारी सत्र में।
पुनर्गठन 6 अप्रैल के पत्र में ॥69॥
निम्न वर्तमान कार्यकारिणी है।
पदाधिकारियों की सारिणी है ॥70॥
श्रीगंगानगर रावला के शिक्षक है।
आर. सिंह कस्वाँ राष्ट्रीय अध्यक्ष है ॥71॥
पकड़े राष्ट्रीय सेवा कमान है।
सेवा स्वाभिमान ही पहचान है ॥72॥
वे शालीन बहुत एक व्यक्ति है।
शालीनता सेवकों की शक्ति है ॥73॥
अजमेर गोदारा चिकनवास है।
सबको महासचिव से बड़ी आस है ॥74॥
मान सम्मान गोदारा हिसार के।
ये इंसान विनम्र सेवा प्यार के ॥75॥
कोषाध्यक्ष निरंजन निराकार है।
बिशनपुरा के खीचड़ साकार है ॥76॥
सेवक इसमें सम्पूर्ण देश के।
सेवा में संलग्न मेले विशेष के ॥77॥
भक्त प्रह्लाद कार्यालय प्रभारी है।
रात दिन करै सेवाभारी है ॥78॥
लगे पन्द्रह चन्दा समिति में।
20 नियंत्रण कक्ष कमेटी में ॥79॥
70 निजमंदिर की सम्भाल में।
22 निजमंदिर दान देखभाल में ॥80॥
दान चढ़ावा गिणती में बीस।
श्रीगंगानगर धर्मशाला पच्चीस ॥81॥
रसोवड़ै लगे एक सौ अठारह है।
पीपासर मंदिर पर लगे बारह है ॥82॥
लगे हैं 128 यातायात में।
पन्द्रह सेवकदल आवास में ॥83॥
लगे 6 सिरसा धर्मशाला में।
65 गुरु जम्भेश्वर गौशाला में ॥84॥
दस दान रसीद भोजनालय पै।
142 प्रातः नर भोजनालय पै ॥85॥
140 पुरुष भोजन द्वितीय पारी में।
112 महिला भोजन प्रथम पारी में ॥86॥
105 महिला भोजन द्वितीय पारी में।
15 लगे पानी टेंकर सप्लाई में ॥87॥
हवन कुण्ड ड्यूटी में पैंतीस है।
लगे प्याऊ ड्यूटी पै पच्चीस है ॥88॥
छः लगे राशन आपूर्ति में।
दो सेवकदल कार्या आपूर्ति में ॥89॥
दस लगे हैं मेला बाजार में।
पन्द्रह जलदाय विभाग में ॥90॥
18 हनुमानगढ़ धर्मशाला में।
आठ पंजाब की धर्मशाला में ॥91॥
6 कार्यरत है गस्ती दल में।
65 धाम सम्भराथल में ॥92॥
दस लगे हरियाणा भवन में।
69 लगे जलपान वितरण में ॥93॥
65 सेवक है जुतास्थल में।
62 करते व्यवस्था पांडाल में ॥94॥
आठ पंचायत धर्मशाला कर्म में।
11 को लगाया दूध वितरण में ॥95॥
सेवक दल का लगा सेवा में चित।
ऊपर पूरा दे दिया सेवकदल वित्त ॥96॥
सेवकों का जीवन है चन्दन।
हम करें सवक दल वंदन ॥97॥
भू पर उतरे सेवकराज है।
गर्व सेवको पै करे समाज है ॥98॥
स्वागत सेवकों का ज्यूँ वसंत।
पूजन सेवकों का ज्यूँ हो संत ॥99॥
सेवक परिवर्तन के प्रबल पुंज है।
करते हरदम जंभगुरु की गूंज है ॥100॥
करते प्रेरित हर वे प्राणी को।
पिलाते छाण कर पाणी को ॥101॥
तज अज्ञ द्वेष और पाखंड को।
ले निजधर्म पंथ के रंग-ढ़ंग को ॥102॥
सेवकदल टीम बड़ी चातुर।
है सेवा नित संलग्न आतुर ॥103॥
सेवा सेवक दल का मूल मंत्र है।
रोकते पर्यावरण का षड्यंत्र है ॥104॥
कहे बृज लाल खीचड़ चेतो चेतण हारू।
सेवक सब कारण क्रिया सारूं ॥105॥
धरा गगन में गूंजे ये नारा।

हो सेवापूर्ण ये देश हमारा ॥106॥
सेवा से सब कुछ हो आबाद।
सेवा हैं भारत देश आजाद ॥107॥
सर्वजन सेवक करत बड़ाई।
सेवा की है ज्योति जगाई ॥108॥
दिशाहीन को दिशा बतायें।
उद्देश्यहीन को पथ समझायें ॥109॥
यश सेवक दल का कहा न जाये।
नर नारी उनके गुण गाये ॥110॥
सेवक दल ने उठाया है बीड़ा।
सेवक समझे यात्री की पीड़ा ॥111॥
कहते सेवक सेवा में लग जाओ।
सेवा सब करके दिखलाओ ॥112॥
गुरु जंभेश्वर की देखो लीला।
समाज सेवक बणा कबीला ॥113॥
सेवक सेवा की जाणै सार।
सेवा कर कर करे उजियार ॥114॥
सेवक दल का कहुँ ठिकाना।
सेवा को ही जीवन माना ॥115॥
पर सेवा का गुर है लिन्हा।
सेवाव्रत को धन्य किन्हा ॥116॥
सेवक सप्ताह लगावै डेरा।
सेवा करते ही होत सवेरा ॥117॥
सेवक गुरु जम्भ शरण आवै।
सेवक सेवा का फल है पावै ॥118॥
सेवा करै और ध्यान लगावै।
गुरु जम्भेश्वर की पा पावै ॥119॥
यातायात में मार्ग दिखलावै।
जाम की समस्या सुलझावै ॥120॥
बुजुर्गो को धौक लगवावै।
हवन कुण्ड स्वयं ले जावै ॥121॥
जल हर जगह वितरण करावै।
प्यासों सेवक प्यास मिटा वै ॥122॥
भूख लगे बिनै भोजन करावै।
आत्मा उनकी संतुष्ट करावै ॥123॥
यात्रियों को दिलवावै आवास।
सेवक सब सेवा करते खास ॥124॥
छोटे बड़े का करते सम्मान।
सेवा सब में जगावै स्वाभिमान ॥125॥
प्रतिभाओं की प्रतिभा उभारे।
युवाजनो का भविष्य संवारै ॥126॥
सेवको का करो अभिनन्दन।
मेहनत का हम करें वन्दन ॥127॥
सब सेवकों को नवण प्रणाम।
सफल सदा हो सेवक शुभ काम ॥128॥
'पृथ्वीसिंह' सेवक खुशियों का घेरा।
रामसिंह टीम का शीतल सवेरा ॥129॥

॥दोहा॥

अजमेर संलग्न सदा सेवा में।
68 तीर्थ मेवा मिलती सेवा में॥
सेवक पूरे देश को भाये।
आ परमार्थ में मन लगाये॥
अन्त सब यहीं रह जाई।
सेवा कर सब करो भलाई॥
बेकार कर्म चित न धराई।
जीवन भर करो सेवकाई॥

-पृथ्वी सिंह बैनीवाल बिश्नोई
सैक्टर 14, हिसार
मो.: 09467694029

बिश्नोई सभा, हिसार ने शुरू की कैरियर गाइडेंस एवं मेट्रीमोनियल सेवा

बिश्नोई सभा, हिसार ने समय की मांग और समाज की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए कैरियर गाइडेंस व प्लेसमेंट और मैट्रीमोनियल सेवा शुरू की है। कैरियर गाइडेंस सेवा के अंतर्गत समय-समय पर युवाओं के मार्गदर्शन हेतु कैरियर गाइडेंस सेमीनार एवं काउंसलिंग आयोजित की जाएगी, जिसमें कुशल विशेषज्ञों द्वारा युवाओं का मार्गदर्शन किया जाएगा। साथ ही बेरोजगार युवाओं का बायोडाटा एकत्रित कर समाज के उद्यमियों व अन्य कंपनियों को भेजा जाएगा, ताकि उनको वहां रोजगार के लिए चयनित करवाया जा सके। सभा द्वारा विभिन्न कम्पनियों को आमन्त्रित कर रोजगार मेले का भी आयोजित किया जाएगा। इस सेवा का लाभ उठाने के इच्छुक युवाओं से अनुरोध है कि वे सभा द्वारा निर्धारित प्रपत्र को भरकर सभा कार्यालय में जमा करवाएं या pcbshisar@gmail.com ईमेल पर भेजें। सम्पर्क सूत्र: 8607900029, 9416594007, 9812108255

वैवाहिकी (Matrimonials)- समाज में विवाह योग्य युवा-युवतियों के अभिभावकों के मार्गदर्शन एवं सहायता हेतु सभा द्वारा वैवाहिकी सेवा प्रारम्भ की गई। इस सेवा का लाभ उठाने के इच्छुक महानुभावों से अनुरोध है कि सभा द्वारा निर्धारित प्रपत्र भरकर कार्यालय में जमा करवाएं या bmbhisar@gmail.com ईमेल पर भेजें। सम्पर्क सूत्र: 9355667781, 9813067666, 8607900029, 9416995529

नोट: दोनों ही प्रपत्र व विस्तृत नियमावली बिश्नोई सभा, हिसार के कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं तथा सभा की वेबसाइट www.bishnoisabhahisar.com से भी डाउनलोड किए जा सकते हैं।

-प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार
दूरभाष: 01662-225804

वील्होजी कृत हरजस

(राग आसा)

हरि का ढिकोलिया ढुळो मेरा भाई, अैसी सींचौ वाड़ी सूकि न जाई॥1॥टेक
काया कूप चित चांच वणाई, पंवण नेज जीभ्या घड़ि लाई॥2॥
हरि नांव नीर कुळ सुरधारा, सहजे पाणी सींचत संत कीयारा॥3॥
सींचत सींचत जब रुत्य आई, फूली फळी वाड़ी बोहत सुवाई॥4॥
वील्हा विसन कण की वारा, संतजण लुण्य चुण्य उतरे पारा॥5॥

हे प्राणी, ईश्वर के नाम की ढेकली ढालो, ऐसी सिंचाई करो ताकि ये बाड़ी सूख न पाए। काया का कुआं बनाकर चित की चौंच बनाओ। पवन की रस्सी बनाकर, जिह्वा की घड़ी लगाओ। ईश्वर के नाम की जल धारा बहाओ, इससे सहज ही में सिंचाई होगी। सिंचते-सिंचते जब समय आया तो वह बाड़ी फूलों और फलों से सुसज्जित हो गई। कवि वील्होजी कहते हैं- विष्णु भगवान के नाम की इस बाड़ी को इकट्ठी करके, भव सागर से पार उतर जाओ।

हरि को आरणियौ मांडि रे लुहारा, कूड़ क्रतब छाडि गिवारा॥1॥टेक
तन करि अहरण्य रसना हथोड़ा, सास धुंवण्य करि सुरति अकोड़ा।
क्रम करि कोयला माया जाळी, व्रभ अगन्य मां ले पर जाळी॥2॥
क्रीया सार सहज सूं तांई, ता वरखि सूं तूटी न जाई।
घण करि ग्यान मन कुंवारा, वारत वारत होय निसतारा॥3॥
वील्हा भल कारीगर सोई, घाट पड़तो खोट न होई॥4॥

हे मूर्ख लुहार, अन्य कर्त्तव्यों को छोड़कर हरि का ऐरणिया स्थापित करो। शरीर को ऐरण बनाओ और जिह्वा को हथोड़ा बनाओ, अपने श्वासों को धमनी बनाओ और सुरता को संडासी बनाओ, कर्मों के कोयले से माया को ब्रह्म अग्नि में जलाओ। इस क्रिया को सहज ही में धारणा करो और वर्षों तक मत छोड़ो, ज्ञान के घण से मन को मारो, इससे तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। कवि वील्होजी कहते हैं- वही अच्छा कारीगर है, जिसकी भक्ति में किसी प्रकार कपट नहीं होता है।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

बिश्नोई लोकगीत

भात के गीत

आज शहर में ए बीरा झिलमिल हो रह्या।
आया-आया मां गा जाया बीर, हीरा जड़ लाया चूंदड़ी॥
ओडू तो ए बीरा हीरा झड़ पड़ै।
बुगचै में मेलुं तो तरसै जीव, सादी क्यूं नी लाया चूंदड़ी॥
आज सहर में ए बीरा, झिलमिल हो रह्या।
आया-आया राहू जी गा सिव, हीरा जड़ लाया चूंदड़ी॥
ओडू तो ए बीरा हीरा झड़ पड़ै।
बुगचै में मेलुं तो तरसै जीव, सादी क्यूं नी लाया चूंदड़ी॥
आज सहर में ए बीरा, झिलमिल हो रह्या।
आया-आया रामू गा सिव, हीरा जड़ लाया चूंदड़ी॥
ओडू तो ए बीरा, हीरा झड़ पड़ै।
बुगचै में मेलुं तो तरसै जीव, सादी क्यूं नी लाया चूंदड़ी॥3॥

--00--

जोधाणै थे ज्याज्यो जी, अमर पटो ल्याज्यो जी ओ।
रामू जी रा छावा, थानै सुख गी ओ घड़ी।
सुख गी घड़िया में आपगी माया में।
माता रो दिल राजी जी ओ।

रामी बाई रा बीरा थानै, सुख गी ओ घड़ी।
आंगणीय में ऊबा कोई सोलह सूरज उग्या जी ओ।
रामू जी रा छावा, थानै सुख गी ओ घड़ी।
सुख गी घड़िया में आपगी माया में।
बहन रो दिल राजी जी ओ।
रामी बाई रा बीरा, थानै सुख गी ओ घड़ी।
माथै रो धूमाळो फूल कहरो भारो जी ओ।
जोधाणै थे ज्याज्यो जी, अमर पटो ल्याज्यो जी ओ।
रामू जी रा छावा, थानै सुख गी ओ घड़ी।
सुख की घड़िया में आपगी माया में।
माता रो दिल राजी जी ओ॥4॥

--00--

साभार- बिश्नोई लोकगीत

लोकगीत हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। इन्हें संजोकर रखना हमारा दायित्व है। खेद का विषय है कि आज की युवा पीढ़ी लोकगीतों को भूलती जा रही है। माताओ-बहनों से अनुरोध है कि बिश्नोई समाज में विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों को कलमबद्ध कर 'अमर ज्योति' को भेजें ताकि उन्हें प्रकाशित कर भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।

-सम्पादक

दृष्टिकोण

सह-अस्तित्व की मधुरता

सृष्टि के आरम्भ से ही प्रकृति और मनुष्य का अंतरंग संबंध रहा है। उद्विग्नता एवं निराशा के क्षणों में मानव के हृदय में प्रकृति नवीन आशा का संचार करती है। शास्त्रों में वर्णन आता है कि विधाता ने सृष्टिनिर्माण के समय सर्वप्रथम, अपनी एक कला से वृक्षों व वनस्पतियों की, दो कलाओं से जल जंतुओं की, तीन कलाओं से अंडज पक्षियों की तथा चार कलाओं से चतुष्पद पशुओं की एवं पाँच कलाओं से मनुष्यों की रचना की। पुनः जीवन निर्वाह तथा सह-अस्तित्व हेतु पर्यावरण का निर्माण किया गया।

मानव का जीवन भी सह-अस्तित्व में ही सुरक्षित है। सृष्टि का आदिग्रंथ ऋग्वेद कहता है- 'मा हिंस्यात् सर्वभूतानि' अर्थात् किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए।

जोधपुर में सलमान खान को सजा सुनाए जाने के बाद वहाँ का स्थानीय बिश्नोई समाज और उनका जीव प्रेम पुनः चर्चा में आ गया। इस संदर्भ में पशु-पक्षियों और वृक्षों की आध्यात्मिक महता का विश्लेषण...

वेद कहता है कि सभी निर्भय होकर अपना जीवन जीना चाहते हैं। इसी से प्रभावित होकर महावीर स्वामी तथा महात्मा गौतम बुद्ध ने 'अंहिसा परमोधर्मः' का सदुपदेश दिया था। पुराणों का निचोड़ भी यही है कि जो अपने कष्टकर लगता है, वैसा आचरण दूसरों से (किसी भी प्राणी से) कभी नहीं करना चाहिए। शास्त्रों का कहना है कि सदा जियो तथा दूसरों को भी जीने दो। शास्त्रों के अनुसार, वृक्षों में श्रेष्ठ वृक्ष पीपल है, जिसे भगवान कृष्ण अपना स्वरूप बताते हैं। जल जंतुओं के देव वरुण हैं, पक्षियों के स्वामी गरुड़ तथा पशुओं के स्वामी शिव है। सभी देवता अपने वर्ग की हानि से कुपित होते हैं। श्रीमद्भागवत पुराण के ग्यारहवें स्कंध के एक श्लोक में परमात्मा के शरीर का वर्णन किया गया है कि आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, प्रकाशमान समस्त ग्रह-नक्षत्र, तारादि पिंड, जीव-जंतु, दिशाएँ, पेड-पौधों, वनस्पतियाँ, नदी, समुद्र, ये सभी भगवान के शरीर हैं। अतः सभी में अनन्य भाव से ईश्वरीय भावना रखनी चाहिए। कारण, जिस परमात्मा से यह सृष्टि उत्पन्न हुई है, उसी में यह रह रही है तथा अंततः विलीन भी उसी में होगी। प्रत्येक पदार्थ में वही समाया है। अतः आत्मवत्

सर्वभूतेषु की दिव्य दृष्टि पाकर जब मानव सभी प्राणियों में एकत्व का अनुभव करने लगता है, तभी वह लोक कल्याण में समर्थ होता है। वैदिक धर्म में पंच महायज्ञ की प्रधानता है, जिसमें एक भूतयज्ञ भी है, जिसमें कृमि, कीट, पतंग, पशु, पक्षी आदि के निमित्त प्रतिदिन भोज्य पदार्थ समर्पित किया जाता है।

वेदों में जितनी स्तुतियाँ देवताओं की हैं, वे सभी पर्यावरण की विशुद्धता एवं समस्त जीवों के रक्षणार्थ कही गई हैं। चारों वेदों का प्रथम मंत्र पृथिव्यादि पंचमहाभूतों की स्तुति से संबंध रखता है। अग्नि, जल, पृथ्वी, आकाश, वायु- इन सभी पंचतत्वों द्वारा समष्टि का यज्ञ हो रहा है। अतः व्यष्टि रूप में इन्हीं तत्त्वों की सहायता से जीवन निर्वाह करने वाले मानवों का परम कर्त्तव्य बनता है कि पर्यावरण को शुद्ध रखने में सभी अपना योगदान करें। सह-अस्तित्व का भाव है अपने साथ दूसरों के अस्तित्व को भी बनाए रखना। हमारे वेद एवं उपनिषद् इसी लोक कल्याणकारी भावना से ओतप्रोत हैं। हमें उदार दृष्टि अपनाते हुए चराचर विश्व को परिवार स्वीकार करना चाहिए तथा त्यागपूर्वक सांसारिक वस्तुओं को ग्रहण करते हुए अपने क्षुद्र अहं से ऊपर उठकर आत्मस्वरूप समस्त प्राणियों से प्रेम करना चाहिए।

-प्रो. गिरिजा शंकर शास्त्री, प्रोफेसर
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
(साभार- दैनिक जागरण)

जैसी नगरी – वैसे लोग

लगभग 25 वर्ष पूर्व की बात है। भाभा अणु अनुसंधान केन्द्र, बुम्बई में दो बिश्नोई वैज्ञानिक साथ-साथ सेवा करते थे। कार्यालय में भी एक स्थान पर बैठकर अनुसंधान कार्य करते थे। आवास भी अणु शक्ति नगर में आसपास थे और रोजाना परिवार सहित आना-जाना व मिलन होता था। बच्चे भी साथ-साथ खेलते थे। परन्तु अवस्था के अनुसार अलग-अलग संस्था में पढ़ते थे।

विडम्बना यह थी कि लम्बे समय तक साथ रहने के बावजूद वे आपस में यह नहीं जानते थे कि हम दोनों बिश्नोई हैं। उनमें से एक अपने नाम के आगे सिंह लिखते थे, पूरा नाम डॉ. मुनीराज सिंह था जो जिला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश के प्रवासी थे। दूसरे अपने नाम के आगे थालोड़ पूरा नाम अंग्रेजी भाषा में के.एल. थालोड़ लिखते थे जिसे दूसरे लोग थेलर समझते थे। ज्यादातर थेलर ईसाई हैं, हाल ही में एक वैज्ञानिक को नोबेल पुरस्कार मिला है व अपने आप के आगे थेलर लिखते हैं। कुछ हिन्दू भी केरला थेलर, थरूर, थलोर आदि लिखते हैं और वे ब्राह्मण हैं। श्री के.एल. थालोड़, ग्राम बड़ोपल, जिला फतेहाबाद के हैं। बुम्बई के कल्चर के अनुसार ज्यादा घुलना-मिलना, गप्पे हांकना, एक दूसरे की गहराई में जाने का रिवाज नहीं है। कैसे हैं? - फाईन हैं। बस इतना ही कल्चर है। फाइन मिस्टर सिंह, वैल मिस्टर थेलर कह कर अपनी राह पकड़ लेते थे।

एक दिन की बात है कि मुम्बई के एक विद्यालय में चित्रकला की बहुत बड़ी प्रदर्शनी लगी थी, उसमें हजारों बच्चों ने भाग लिया था। उसमें वैज्ञानिक एम. आर. सिंह के बच्चे ने भी भाग लिया तथा बहुत सुन्दर चित्रकारी का प्रदर्शन किया और यह हजारों बच्चों में प्रथम स्थान पर थी। डॉ. सिंह ने कहा कि थेलर साहब परिवार सहित चलो प्रदर्शनी देखेंगे व अपने बच्चों को उत्साहित करेंगे। श्री थेलर सपत्नी श्री सिंह के साथ प्रदर्शनी स्थल पर पहुंचे। यह अवलोकित करते हुए वहां पहुंचे जहां डॉ. सिंह के बच्चों के चित्र लगे हुए थे। वहां पर बहुत सुन्दर प्रकृति से ओतप्रोत व खेजड़ली बलिदानी से सम्बन्धित भी चित्र चरित्रार्थ कर रखे थे तथा मराठी भाषा में संक्षिप्त विवरण लिखकर नीचे मधुर बिश्नोई लिखा हुआ था। तब श्री थेलर ने पूछा डॉ. साहब यह बिश्नोई मधुर कौन है? उन्होंने तपाक से कहा मेरा बेटा है। तब श्री थेलर ने डॉ. सिंह को बातें में लेकर कहा कि पर मैं भी बिश्नोई हूं। तब डॉ. साहब ने कहा आप पिछले 10 वर्षों तक कहां थे, कहां रहते थे? जैसे आज सहृदय से मिल रहे हो वैसे पहले मिलते तो हमारा पारिवारिक स्नेह एक दूसरे का विश्वास और भी प्रगाढ़ होता। इस समय दोनों वैज्ञानिक सेवा निवृत्त हो गये और साथ-साथ मकान बनाकर मुम्बई रह रहे हैं। श्री थालोड़ ने डॉ. सिंह के नजदीकी रिश्तेदार श्री सिद्धार्थ सिंह बिश्नोई के बेटे से अपनी लड़की का विवाह भी कर दिया और यह सब डॉ. सिंह ने करवाया।

इसीलिए नाम, उपनाम, शब्द कितने सार्थक हैं तथा जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना ने मात्र बिश्नोई शब्द द्वारा दोनों परिवारों को आपस में रिश्तेदारी व बोम्बे में शेष जीवन बिताने का निर्णय किया तथा दोनों आस-पास मकान बनाकर स्नेहपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

-नरसीराम बिश्नोई
1135, सैक्टर 14, हिसार
मो.: 9255567900

वनों की कटाई के परिणाम और दुष्प्रभाव

आज के आधुनिक समय में जनसंख्या वृद्धि के साथ जंगलों का विनाश बढ़ गया है। लोग नहीं जानते कि पेड़ हमारी जिन्दगी हैं। पेड़ों से हमें जीवनदायिनी हवा (ऑक्सीजन) मिलती है, पेड़ों और जंगलों से हम अपनी काफी जरूरतों को पूरा कर पाते हैं। जंगलों के ही कारण बारिश होती है लेकिन तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण मानव अपनी जरूरतों के लिए अंधाधुंध जंगलों का विनाश कर रहा है। यही कारण है कि आज जंगलों का अस्तित्व खतरे में है। नतीजतन मानव खतरे में भी है। एक अनुमान के मुताबिक दुनिया में हर साल 1 करोड़ हैक्टेयर इलाके के वन काटे जाते हैं। शहरीकरण का दबाव, बढ़ती आबादी और तेजी से विकास की भूख ने हमें हरी-भरी जिन्दगी से वंचित कर दिया है।

जंगलों में पेड़ों को अवैध रूप से काटा जाता है। एक ओर सरकार पर्यावरण संरक्षण के लिए करोड़ों रुपए खर्च कर रही है वहीं दूसरी ओर लकड़ी के जंगलों में दिन-रात पेड़ काट रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि लकड़ी माफिया पेड़ों को प्रतिशोध की भावना से काट कर उनका व्यापार करने का कोई मौका अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहते।

वनों की कटाई से मिट्टी, पानी और वायु क्षरण होता है जिसके परिणामस्वरूप हर साल 16,400 करोड़ से अधिक वृक्षों की अनुमानित मात्रा में कमी देखी जाती है। वनों की कटाई भूमि की उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव डालती है। इसके कई दुष्प्रभाव होते हैं-

बाढ़ और सूखा: मिट्टी का कटाव मिट्टी के प्रवाह को बढ़ाता है जिसके कारण बाढ़ और सूखा का विशिष्ट चक्र शुरू होता है।

पहाड़ी ढलानों पर जंगलों को काटना मैदानों की ओर नदियों के प्रवाह को रोकता है, जिसका पानी की दक्षता पर असर पड़ता है, फलस्वरूप पानी तेजी से नीचे की ओर नहीं आ पाता।

वनों की कटाई की वजह से भूमि का क्षरण होता है क्योंकि वृक्ष पहाड़ियों की सतह को बनाए रखने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा तेजी से कढ़ती बारिश के पानी में प्राकृतिक बाधाएँ पैदा करते हैं। नतीजा नदियों का जल स्तर अचानक बढ़ जाता है जिससे बाढ़ आती है।

मिट्टी की उपजाऊ शक्ति की हानि: जब ईंधन की मात्रा अपर्याप्त हो जाती है तो गाय का गोबर और वनस्पति अवशेषों को ईंधन के रूप में भोजन बनाने के लिए उपयोग में लिया जाता है। इस वजह से पेड़ों के हर हिस्से को धीरे-धीरे इस्तेमाल में लिया जाता है, परन्तु मिट्टी को पोषण नहीं मिल पाता। बार-बार इस प्रक्रिया को दोहराने से मिट्टी की उत्पादकता प्रभावित होती है जिससे यह मिट्टी-उर्वरता के क्षरण का कारण बनता है।

वनों की कटाई के साथ जमीन के ऊपर उपजाऊ मिट्टी बारिश के पानी से उन जगहों पर बह जाती है जहाँ इसका इस्तेमाल नहीं किया जाता है।

वायु प्रदूषण: वनों की कटाई के परिणाम बहुत गंभीर हैं। इसका सबसे बड़ा नुकसान वायु प्रदूषण के रूप में देखने को मिलता है। जहाँ पेड़ों की कमी होती है वहाँ हवा प्रदूषित हो जाती है और शहरों में वायु प्रदूषण की समस्या सबसे ज्यादा है। शहरों में लोग कई बीमारियों से पीड़ित हैं विशेष रूप से अस्थमा जैसी साँस लेने की समस्याओं से।

विलुप्त होती प्रजातियाँ: वनों के विनाश के कारण वन्यजीव खत्म हो रहा है। कई प्रजातियाँ गायब हो गई हैं (जिसे एशियाटिक चीता, नामदाफा उड़ान गिलहरी, हिमालयी भेड़िया, एल्विरा चूहा, अंडमान श्रू, जेनकिंस श्रू, निकोबार चिड़िया आदि) और कई विलुप्त होने के कगार पर हैं।

ग्लोबल वार्मिंग: वनों की कटाई का प्राकृतिक जलवायु परिवर्तन पर सीधा प्रभाव पड़ता है जिससे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। जंगलों के घटते क्षेत्र के साथ बारिश भी अनियमित हो रही है। इन सबके कारण ग्लोबल वार्मिंग में इजाफा होता है जिससे मनुष्यों पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

रेगिस्तान के फैलाव: जंगलों के क्षेत्र में निरन्तर कमी

और भूमि के क्षरण के कारण रेगिस्तान एक बड़े पैमाने पर फैल रहा है।

जल संसाधन में कमी: आज नदियों का पानी उथला, कम गहरा और प्रदूषित हो रहा है क्योंकि उनके किनारों और पहाड़ों पर पेड़ों और पौधों की अंधाधुंध कटाई के कारण। इस वजह से अपर्याप्त वर्षा होती है जिससे जल स्रोत दूषित हो रहा है और पर्यावरण भी प्रदूषित और सांस लेने में घातक साबित हो रहा है।

औद्योगीकरण के दुष्प्रभाव: पेड़ों और पौधों ने वातावरण में फैलने वाली इन विषैली गैसों को रोकने और वातावरण में राख आदि के कण को रोककर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया है। आजकल शहरों, यहाँ तक कि कस्बों और गाँवों में भी रोज नए-नए उद्योग लग रहे हैं। उनसे निकलने वाला धुआं विभिन्न प्रकार की विषाक्त गैसों के साथ पर्यावरण में मिलता है।

ओजोन परत को नुकसान: वनों की कटाई के परिणामस्वरूप पृथ्वी का सामान्य रहने वाला वातावरण प्रदूषित हो गया है। यह ओजोन परत के लिए गंभीर खतरा है जो पूरी पृथ्वी की रक्षा के लिए आवश्यक है। उन बुरे दिनों की कल्पना भी करना बेहद खतरनाक है जब ओजोन परत गायब हो जाएगी।

आदिवासियों की घटती संख्या: जंगल के लिए आदिवासियों का अस्तित्व आवश्यक है। आधुनिक समाज की सोच ने जीवन को लाभ का उद्देश्य बना दिया है लेकिन आदिवासियों के लिए जंगल एक पूर्ण जीवन शैली है। यह उनकी आजीविका का साधन है। वन संरक्षण में उनका दृष्टिकोण बहुत महत्त्वपूर्ण है जो न तो लागू किया गया है और न ही इसे मान्यता प्राप्त है। वे अपने पूर्वजों के समय से ही जंगल को सुरक्षा कर रहे हैं। आदिवासियों को जितनी जमीन जरूरी है वे उतना ही लेते हैं और बदले में वे उन्हें कुछ देते हैं। उनके मन में वन के प्रति गहरा सम्मान है। जंगल के उपयोग में आदिवासियों के तरीके और नियम स्वाभाविक रूप से स्थायी हैं क्योंकि वन संरक्षण उनके रक्त में है।

यह उल्लेखनीय है कि वन केवल आदिवासियों का आर्थिक आधार ही नहीं बल्कि इससे वे अपनी बीमारियों के उपचार में जंगली जड़ी-बूटियों का भी उपयोग करते हैं। 'बाकी आदिवासियों' का ज्ञान पूरे देश में जड़ी-बूटियों और हर्बल उपचारों के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। बागी आदिवासी मातृत्व (प्रसव) के दौरान पेड़ों की छाल का उपयोग करते हैं, जिसे दवा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

हर्बल दवाओं की अनुपलब्धता: आज वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण पहाड़ और जंगल वीरान हो गए हैं। इस कारण औषधीय वनस्पति प्राप्त करना दुर्लभ हो गया है।

वृक्षारोपण की कमी के कारण अनमोल प्राकृतिक संपत्ति तेजी से नष्ट हो रही है। यह जीवन और पर्यावरण के संतुलन को खराब कर रहा है। पत्थरों की मांग के लिए पहाड़ों की चट्टानों को तोड़ा जा रहा है और आसपास के इलाकों में वर्षा भी कम हो रही है।

बेघर पशु: अंतहीन वनों की कटाई के कारण निराश्रित जानवर गाँवों में शरण ले रहे हैं। नतीजतन देश के गाँवों और कस्बों में प्रवेश करने वाले जंगली जानवरों की घटनाएँ बहुत आम हो रही हैं जो मानव जीवन के लिए एक गंभीर खतरा है।

निष्कर्ष: आज जंगलों को अंधाधुंध रूप से काटा जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप मौसमी परिवर्तन, मिट्टी में गर्मी, ओजोन परत की कमी आदि में वृद्धि हुई है। हमारी विकास प्रक्रिया ने हजारों लोगों को पानी, जंगलों और भूमि से विस्थापित कर दिया है। इस महत्त्वपूर्ण स्थिति में जंगल की रक्षा करना न केवल हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए बल्कि हमारा धर्म भी होना चाहिए। आइए हम सब पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोकने की प्रतिज्ञा ले और जंगल को बचाने में एक अमूल्य योगदान करें। यदि वास्तव में हमें आने वाली पीढ़ियों के लिए जंगल की विरासत की रक्षा करनी है तो हमें उनसे लाभ प्राप्त करने की सोच की बजाए जीवन के लिए जंगलों को बचाने की सोच का विकास करना होगा। हमें सीखना होगा कि जंगल का सम्मान कैसे करें और हमारे सोचने के तरीके को कैसे बदलें।

-मृगेन्द्र वशिष्ठ
बढ़वाली ढाणी, हिसार

बाल कविताएँ

कर्मा गोरा

आओ
पेड़ों की जान बचाएं,
बोली कर्मा से गोरा।
रूंखों की
रखवाली करना है
उपदेश नहीं है कोरा।
हिम्मत है तो
चला कुल्हाड़ी
ना कर जोरी जोरा।
जाम्भोजी की
हम है बेटी
डाल ना हम पर डोरा।
पेड़ों को ना
कटने देंगी,
ना निकालेंगी हम
न्योरा!

छोना

हरिणों के इक
झुंड से,
बिछुड़ गया था छोना।
रुकमा उसको
घर ले आई, सुनकर
उसका रोना।
खूब मचाता धमाचौकड़ी
मनमर्जी की करता,
गर्दन ऊँची
करके चलता
नहीं किसी से डरता।

सेल्फी

पेड़ लगाकर
उन्हें पालना,
खेला करती टोली।
विष्णु-विष्णु कहते
सबको,
मीठी उनकी बोली।
दादी संग
सेल्फी लेते
बातें करते भोली।
दादा जी का
छुपा के चश्मा
मांगते उनसे गोली।
रगों में रम जाते सारे
जब-जब आती होली।

प्रसाद

अमावस का
व्रत करके
फूला फिरता राजू।
रोटी को ना
हाथ लगाता,
खाता रहता काजू।
मंदिर में
प्रसाद चढ़ाने,
जब भी कोई आता,
व्रत की बात भूल भालकर
आगे करता बाजू।

बुआ

चोरी चुगली
कर लेती थी,
बुआ हमारी गोरी।
लाज शर्म ना
आती उसको
थी कोरी की कोरी।
बच्चों के
ताबीज चुराने
खूब सुनाती लोरी।
हमने भी
उन्हें इक दिन
सबक सिखाने की ठानी।
बटुवे में रख दिया बिच्छू
याद आ गई नानी।

हाऊ

बापू दारू
पीकर आ जाते,
पिट जाती थी
माता।
ठंडी पड़ी है
रोटी तेरी,
जा मैं ना इनको खाता।
रोना-धोना सुनकर
आ जाते थे ताऊ,
चंद्र बोला बापू से-
''अगर दुबारा
मां को पीटा
खा जाएगा हाऊ।''

साभार- जाम्भोजी की चिड़कली
(कवि सुरेन्द्र सुन्दरम्, श्रीगंगानगर)

पैकेजिंग इंडस्ट्री में बेशुमार अवसर

बाजार से जब भी कोई उत्पाद खरीदते हैं तो सबसे पहले उसकी पैकिंग हमें आकर्षित करती है। फिर चाहे वह टूथब्रश हो या फिर टीवी। पैकिंग देखकर ही कई बार हम न चाहते हुए भी उस प्रोडक्ट को खरीद ही लेते हैं। अच्छी पैकिंग के लिए कंपनियों द्वारा 'पैकेजिंग टेक्नोलॉजी का यूज किया जाता है। इस लिहाज से पैकेजिंग में करियर को उभरता हुआ फील्ड माना जा रहा है। इसलिए अगर किसी नए करियर या इमरजिंग करियर के बारे में आप सोच रहे हैं कि इस क्षेत्र में किसी भी स्ट्रीम के छात्र अपना करियर बना सकते हैं। इसके लिए कोर्स और पढ़ाई भी बहुत महंगी नहीं है।

करियर के लिहाज से फुल स्विंग: देश में अभी करीब 2500 सैक्टर आर्गेनाइज्ड हैं, जिनके द्वारा बनाए जा रहे हर उत्पाद के लिए अलग-अलग पैकेजिंग यूनिट की जरूरत होती है। यानी हर एक छोटी से छोटी प्रोडक्शन यूनिट में पैकेजिंग इंडस्ट्री के लोगों की जरूरत होती है। जैसे-जैसे ऑर्गेनाइज्ड सैक्टर में और कंपनियों की संख्या बढ़ेगी, इस सैक्टर में ज्यादा रोजगार के अवसर आएंगे। अभी देश में पैकिंग का बाजार करीब 47.3 मिलियन डॉलर का है। भारत यह बाजार दुनिया का चौथा सबसे बड़ा पैकेजिंग बाजार है। ये सारे संकेत हैं कि आने वाला समय पैकेजिंग इंडस्ट्री में एम्प्लाइमेंट के लिहाज से अत्यधिक आशावादी है।

डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर की हो समझ: पैकिंग में कई तरह से फीचर होते हैं जो इसे मल्टी रोल की कैटेगरी में शामिल करते हैं। इसमें आकर्षक डिजाइन, आकार-प्रकार, प्रिजर्वेशन तकनीक, उत्पाद की सुरक्षा, टारगेट ऑडयंस जैसे तमाम पहलुओं का ध्यान रखना होता है। इसके लिए साइंस और टेक्नोलॉजी की समझ होना बहुत जरूरी है। ज्यादातर कैंडिडेट इस सब्जेक्ट से सेलेक्ट किए जाते हैं। इसके अलावा डिजाइन की समझ होना फायदेमंद माना जाता है। खासकर डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर की समझ। पैकिंग किस तरह की होनी चाहिए इसके लिए उत्पाद की जरूरतों को समझना जरूरी होता है। उत्पाद की जरूरतें यानी इसकी व्यवस्था, शेल्फलाइफ, ट्रांसपोर्ट का माध्यम, कितनी दूर पहुंचाना है, जैसे कई फैक्टर्स जानना जरूरी होता है। इसके बाद तय होता है कि किस तरह की पैकिंग होनी चाहिए। इन सबके अलावा इसमें बाजार की डिमांड के हिसाब से बदलाव, प्रोडक्शन लागत और वातावरण संतुलन का भी ध्यान रखना होता है। कई ऐसी कानूनी बाधाएं हैं, जिनका काम के दौरान ध्यान रखना पड़ता है।

पैकिंग अच्छी हो तो ग्राहक देखकर अक्सर आकर्षित हो जाते हैं। इस लिहाज से पैकिंग सिर्फ उत्पाद को सुरक्षित बनाए रखने के लिए ही नहीं बल्कि ग्राहकों का ध्यान खींचने का भी काम करती है...

पैकेजिंग का चैलेंज: कोई भी ग्राहक किसी सामान को देखकर उत्पाद नहीं खरीदता, अक्सर वह पैकिंग देखकर उत्पाद चुनता है। इस लिहाज से पैकिंग सिर्फ उत्पाद को सुरक्षित बनाए रखने के लिए ही नहीं, ग्राहकों का ध्यान खींचने का भी काम करती है। बाजार में मौजूद हर उत्पाद के लिए अलग-अलग पैकिंग की जरूरत होती है। इसके लिए ऐसी तकनीक चाहिए होती है जो प्रोडक्ट को ग्राहक तक बढ़िया कंडीशन में पहुंचा सके।

पैकिंग उत्पाद की ब्रांडिंग से लेकर उसकी शेल्फ लाइफ तक के सभी फीचर्स के लिए जरूरी होती है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि पैकिंग उस उत्पाद के बारे में सीधे, सरल और आकर्षक अंदाज में ग्राहकों से बात करती है। इसलिए उसका डिजाइन, रंग और आकार ऐसे होते हैं जो ग्राहकों को उत्पादों की भीड़ में उस उत्पाद को चुनन के लिए आकर्षित करे। इसके अलावा पैकिंग, उत्पाद के ट्रांसपोर्टेशन और उसकी सुरक्षा के लिए भी बहुत अहम होती है। ग्राहक को पैकिंग खोलते ही उत्पाद अच्छी क्वालिटी में मिले इसके लिए प्रोटेक्टिव मैटेरियल और उन्नत तरीके से की गई पैकिंग बहुत मायने रखती है।

सैलरी और स्टाइपेंड: पैकेजिंग का कोर्स करने के बाद शुरूआती दौर में कंपनियां औसतन 3-4 लाख रुपये का सालाना पैकेज ऑफर करती हैं। इसके बाद दूसरे सैक्टर्स की तरह यहां भी काम और अनुभव के हिसाब से पैसा बढ़ता जाता है। ट्रेनिंग और इंटर्नशिप के दौरान मिलने वाला स्टाइपेंड भी करीब 25 हजार रुपये तक होता है।

रोजगार के अवसर: पैकेजिंग का पीजी कोर्स करने के बाद कई अलग-अलग पद पर काम कर सकते हैं। इसमें सबसे बेसिक जॉइनिंग पैकिंग एक्जीक्यूटिव स्तर पर होती है। कंपनियां जरूरत के हिसाब से सुपरवाइजर, मैनेजर, रिसर्चर एण्ड डेवलपर, प्रॉक्योरमेंट ऑफिसर, टेक्नोकमर्शियल और क्वालिटी कंट्रोल जैसे स्पेशलाइजेशन में रिक्रूटमैंट करती हैं।

प्रमुख संस्थान

- इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, मुंबई www.lip-in.com (दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई व हैदराबाद में शाखाएं मौजूद)
- गुरु जम्भेश्वर यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, हिसार, www.gjust.ac.in
- एसआईईएस स्कूल ऑफ पैकेजिंग टेक्नोलॉजी सेंटर, नवी मुंबई, www.siessopptc.net

कहां है रोजगार: पैकेजिंग प्रोफेशनल्स को सबसे ज्यादा मौका प्रोडक्शन, मार्केटिंग, रिसर्च एवं डेवलपमेंट आदि जगहों पर मिलता है। मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स, मल्टीनेशनल कंपनियां, फार्मास्यूटिकल व एफएमसीजी कंपनियां प्रोफेशनल्स को अपने यहां अच्छे पैकेज पर नियुक्त करती हैं। वर्तमान समय में सभी छोटी व बड़ी कंपनियां अपने प्रोडक्ट की कीमत बढ़ाने के लिए स्किल्ड प्रोफेशनल्स को तरजीह देती हैं।

इसमें बीटेक को छोड़ दें तो ज्यादातर कोर्स डिप्लोमा या पीजी डिप्लोमा लेवल के हैं इसलिए इसमें कोर्स करने के लिए छात्र का स्नातक होना जरूरी है, जबकि बीटेक कोर्स में दाखिला 10+2 (विज्ञान विषयों के साथ उत्तीर्ण) के बाद ही मिल पाता है। यदि कोई साइंस से ग्रेजुएट है तो उसे कई तरह की सहायता मिलती है। कुछ संस्थान छात्रों के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं, जबकि कई मेरिट के आधार पर दाखिला दे देते हैं। विभिन्न संस्थान अपने-अपने स्तर पर कोर्स चलाते हैं।

कोर्स :

- पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन पैकेजिंग (दो वर्षीय)
- बीटेक इन पैकेजिंग टेक्नोलॉजी (चार वर्षीय)
- डिप्लोमा इन पैकेजिंग टेक्नोलॉजी (तीन वर्षीय)
- सर्टिफिकेट प्रोग्राम इन पैकेजिंग (तीन महीने)
- डिस्टेंस एजुकेशन प्रोग्राम इन पैकेजिंग (डेढ़ वर्षीय)
- इन्टेंसिव कोर्स इन पैकेजिंग (तीन महीने)

– **अमित सरोज,** नई दिल्ली

लोदीपुर धाम (मुरादाबाद, यू.पी.)

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2017-2019
L/WPP/HSR/03/17-19

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

GURU JAMBHESHWAR SR. SECONDARY SCHOOL

ADMISSION OPEN
Nur. to 10+1 (Science, Commerce, Arts)

Facilities

- Smart Classes
- Transport Services
- R.O. Water-Coolers
- Well Established Library
- High Quality Teaching Methods
- Nature Friendly Campus
- Clean Washrooms
- Well Furnished & Spacious Classrooms
- Modern Laboratory System
- Whole Campus Fitted with CCTV Cameras

Jawahar Nagar, Hisar-125001 (Haryana)

✆ 8168758606, 8607918253, 9812108255 ✉ gurujambheshwar029@gmail.com

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप बैनीवाल, प्रधान, बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मई, 2018 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।